

140

1

अथ  
रसिकप्रिया

महाराजकुमार इन्द्रजित प्रणीत ।

( हिन्दी भाषामय )

Rasik priya

१४०  
१



लायें जारति करे लज्जा शय सो वांम ॥ १७ ॥ **मुग्ध**  
**नवलवध** ॥ ता सो मुग्धानवलवध कहत सयां  
 नें लोर ॥ दिन दिन हनी दुति वेढे वर निकहे कवि  
 के ॥ १८ ॥ मोहि को मोहन की गति को गति ही पद्यो  
 वंस कहा धो पड़ेगी ॥ वो पड़े राजन को पजे दिन  
 काहि मदे ग्रियान मटेगी ॥ नैनन की गति मूढ  
 चलावली के सब दास्य का सिचेढेगी ॥ माई कहें  
 यह माई गी रापति जो दिन हे रह भांति वेढेगी ॥ १९ ॥  
**॥ नवजोवन भूषिता मुग्धा ॥** सो नवजोवन भूषि  
 ता मुग्धा को रहे विसा ॥ बाल दसानि के सेज हां जो व  
 न को परवेस ॥ २० ॥ के सब फूलिन ची भूकुरी कटिल  
 टिनित वल ईव दुकाली ॥ वैन नि सोच सको व सो  
 नैन नि कुटि गति की चलि चाली ॥ घोस कुधी  
 र धरो न धरो अवले तुम को मिल जुवन माली ॥ वा  
 को ग्रयान नि कासन को उर ग्रहें जोवन के अ  
 वताली ॥ २१ ॥ सुकताम निन की है मुकति पुरी  
 सीनां कदाहो हांत दाने निकों हसत सीवती सी  
 है ॥ गहनी के मंत्र निके अघरा निकी सीरेष भूकु  
 री सुवेष की भांति विकी सी है ॥ वित चतरा इडुम  
 की सी उरु के से उर कुच सकुचे से नयन निवि  
 रुकी सी है ॥ के सो दासरूप की सी सा लापे म की  
 सी माला अजलौ न रेखा सुनी ते सी अज दी सी  
 है ॥ २२ ॥ **नवल अनेगा मुग्धा ॥ नवल अनेगा हो**  
**इ सो मुग्धा के राव दास ॥** धेले वोले बाल विधि ह से  
 उ सो सविलास ॥ २३ ॥ वंचन न हजे ना घं वलन  
 अ वो हा घ सो वो नै क सारिका उरु क तो सुवा रज  
 म हे करे दी पदुति चर मुषरे धिय तंदो रि के दुरा  
 अ उ हरे तो रिषा योज ॥ मृगज मगल बाल बाह  
 र विहारि हे उ भावे त हे के सब सो मो ह मन भायो  
 न ॥ कल के निता स से वचन विलास नि हो ॥ २४ ॥

य  
 उ  
 ३  
 ५  
 ६

140

7



नासुरतहसोसामसषयायाज् ॥ २४ ॥ **लज्जाप्रायराति**  
**मुग्धा ॥** मुग्धा लज्जाप्रायरातिवरनतकविशिराति  
 करैजुरतिअतिलाजेसोपतिहिवटोवेषाति ॥ २५ ॥  
 वोलीनहोवेचुलाइरहेहरिपाइपोअरुआलीयोआ  
 इ ॥ केसवभेटिवकोभरिअकछुडायरहेजकेमेपेन  
 छोडी ॥ सधोचितेवेकोकेतोकोयोसिरचापिउषे ॥ २६ ॥  
 अरुटनिटोडी ॥ मेभरिचित्रनउचितयोनरहीगहि  
 नेननिलाजनिगोडी ॥ २७ ॥ **मुग्धाकोसयान ॥** मु  
 ग्धासोरहेनहापियसंगसुनडुसजोन ॥ जोकेणह  
 खावेसषीसुषनहिताहिसमान ॥ २८ ॥ पाइपरेमनुह  
 रिकरेपलिकापरपाइधरेभयभीने ॥ सोइगईकहिके  
 सवकेसेहंकोरहिकोरिकसोहनिकीने ॥ साहसके  
 सुषसासुषछेछिनमेहरिमानिसवेसुषलीने ॥ स  
 कउसासहीकेउसेसंगरेहीसुगंधविदाकरिने  
 ॥ २९ ॥ **मुग्धाकोसुरत ॥** मुग्धासुरतकरेनहीसयनेहंस  
 षमानि ॥ छलवलकीनेहोतहेसुषसोभाकीहानि ॥  
 ॥ ३० ॥ **सपरेसषीनवीचिदेकेसोहंछाईकेषवाइकछुसं**  
 वाइवसकीनीववसहे ॥ कामलमृगालिकासमति  
 काकीमालिकासीवालिकाजुडाशमीडिमानसुकि  
 पसेहे ॥ जोनेनविभातभयोकेसवसनेकोवातेरेसे  
 आइगातजातभयोकेधौअसहे ॥ चित्रसीजोराषीइ  
 हचित्रनीविचित्रगतिकहिधोनसरसिकर्यामेकोन  
 करेनेहो ॥ ३१ ॥ **मुग्धाकोमान ॥** मुग्धामान  
 करेनहीकरेतोसुनडुनिदान ॥ योउरवाइछुडाइ  
 ज्योउरपेअज्ञान ॥ ३२ ॥ **वोलैनवालबुलावतहन**  
 खरेखलिषेभुवयेमपरेषे ॥ आयनोहायविलो  
 किविलोकिकछोतवकेसवबुधिविसेषे ॥ छोट  
 वडीविधिरिषलिषीजुगआयुकारेसोकोनजो  
 धं ॥ पेमसोवोलसमानयहोअकुलायकछो  
 केसीहेरेषे ॥ ३३ ॥ **इतिमुग्धा ॥ अथसयान ॥**



केसौरासवसतअकासकेप्रकासघोषघटघरघरघ  
 रघनोछायेहै॥ रतिकीसारतिनाथरूपरतिनाथके  
 सौकहेकेसौराशूठकौनपहिपायेहै॥ ४८॥ मध्या  
 धीराधीरा॥ कान्हभलेजैलासमुझाहोमोहसमुझ  
 कोज्याउमघोहै॥ केसवआपनोमानिकसोमनुहा  
 धियरापदेकौनैलघोहै॥ नैननहीमिलिवेकरि  
 अववेननकोमिलिवोजुरघोहै॥ जारकघोतुम  
 जेसेसषीसदुसहोगुपालमेंऐसोकघोहै॥ ४९॥  
 इति मध्याअथपौढा॥ सनिसमस्तरसकोविरावि  
 चित्रविभ्रमाजाति अतिआक्रामितनायकाल  
 ध्वाभातिसभाति॥ ५०॥ समस्तरसकोविरापौढा॥  
 सोसमस्तरसकोविराकोविदकहतवषाति॥ जो  
 रसभावेशीतमहिताहीरसकीराति॥ ५१॥ देषीहै  
 गुपालएकगोपिकाअनूपरूपसौनैतंसलूनीवास  
 सौधेतंसहारिहै॥ सोभाईसभाअवतासलीयोघन  
 स्यामकिधोइहरांमिनीयोकोमिनीकेशरिहै॥ दे  
 वीकोउरांनवीनवीनमानवीनहोइऐसीभानवी  
 नहावभावभारतीयठारिहै॥ केसौराससवसषसा  
 धनकीसिद्धिइहमेरेजानिमेंनहीसोमेंनकाकीजा  
 रिहै॥ ५२॥ विधि विविभ्रमापौढा॥ अतिविचित्रवि  
 भ्रमसरापौढाप्रगरवषाति॥ जाकीरीयतिहृतिका  
 पियहिमिलोवैआनि॥ ५३॥ हेगतिमंदमनोहरके  
 सवआनरकरहियेजुलहेहैं॥ भौहविलासनिको  
 मलहासनिअंगसवासनिगाढेगहेहैं॥ वंकविले  
 कनिकोंअवलोकिसमोकेनंदकुमारहेहैं॥ एतौ  
 कामकेवांनकहावतफूलनकेविधिभूलिकहेहैं  
 ५४॥ आक्रामितनायकापौढा॥ सोआक्रामित  
 नाइकापौढाकहिदेवित्र॥ मनसावावाचाकर्मना  
 जिहवसकीनोमित्र॥ ५५॥ तोहितगायवजावतना  
 वसगायककेविमलरजयो॥ जोहमेंआनव



७

निंकोछायेओरतेरोतऊनभायो॥भोवैसुतोकरिवै  
 करिभोमिनिभागवडेवसतेकरिपायो॥कांन्हकौ  
 सूधेंनुवाहतिनाहिसचाहतिहेअवपाइलगायो  
 ॥५६॥**लध्यायतिश्रोता॥**सोलध्यायतिजानिजेके  
 सबप्रगठप्रमान॥कांनिकैरेपतिकुलसैवैप्रभुता  
 प्रभुहिसमान॥५७॥आजुविराजतेहैंकहिकेस  
 वआहषभानकुमारिकन्हो॥कांनिविंरचिवहि  
 क्रमकांसरवीजुववीसवधनिवनाई॥अंगवि  
 लोकित्रिलोकमेंऐसीकोनारिनिहारिनना  
 नवाई॥सूरतिवंतसिंगारसमीपसिंगारकियें  
 नुसंदरनाई॥५८॥**अथप्रोटाधीरादिभेद॥**अ  
 दरमांरुअनादरहिप्रगटकरैहितहो॥आकृत  
 पदुरावईप्रोटाधीराहो॥५९॥**सादराप्रोटाधीरा**  
 ॥आवतरेषिलिपउठिआगेद्वेकेसवआपहीआ  
 सनहीनो॥आपहीपाइपवारिभलेजलयांजीको  
 भांजनलाइनवीनो॥वीरीवनाइकेंआगेधरीजव  
 वैहरिकोंकरवीजनेलीनो॥वांहगहाहरिऐसैंक  
 होहसिमैंतोरतौअपराधनकीनो॥६०॥आकृत  
 निआपदुरावईप्रोटाधीराहो॥चितवतिहसिको  
 लतिजिस्वंहिपिउसरावसहो॥६१॥**प्रोटाधीरा**  
**आकृतगुप्त॥**चितआचितआहसांरहसोजुव  
 लांयेंतेंवोलोरहोनितेंमोंनैं॥सोंहअनेकनिआव  
 दुअंककरोरतिकोप्रतिरैंनिकिरोंनैं॥षवांर्येंतेंषा  
 दुवरीनो॥विरीजनुआईहोकेसवआजहोगोनैं  
 मोहनकेमनकीमोहनासीकहोइहधोसिषईसि  
 षकोनैं॥६२॥**प्रोटाअधीरा॥**वातकहैसववक्रवि  
 धिपियकीवातनिवेरि॥उतरतिनहिनआवईप्रोटा  
 धीराहो॥६३॥हितकैरतरेषुदेखासवैहितवात  
 सनोजुसनीसवहीहो॥इहोकोकछुओरवहैसवही  
 सोंहकरोजकरीलवहीहो॥

या



जाहमकेसवरूठासवेहमसोंजुकहीहै॥ कछुमान  
 कीयोअयमानकसोजहसोंअवकेहमिवेकीरही  
 है॥ ६४॥ **अथषोठाध्याय॥** पियकोअतिअपराध  
 गनिहितनकहेहितपानि॥ कहतअधीराषोठति  
 हिकेसवदासवषानि॥ ६५॥ होंसवपासिषारही  
 सिषसीषेनएसिषतेहंसिषाई॥ मेंवहुतेदुषपा  
 हंदेव्यायेकेसवकेपाहेकुदेवनजाई॥ इउहीयेविनु  
 साधुनिहंसंगछूरतिकेअलकीबलताई॥ देषडु  
 देमककीपुटकोरिघटेनमिदेविषकीविषमाई  
 ॥ ६६॥ **षोठाध्याय॥** सुषरूषीवातेकहेजियमेंपि  
 यकीभूष॥ धीराधीराजीनजैजैसीमीठीअुष॥ ६७॥ हों  
 मनमेंलेनवोसौलोकछुअवछाडुदुवालवोवाल  
 हसोंहै॥ केसवस्येअोरनसोरसरसरसवार  
 सवेहमसोंहै॥ देषडुधोइकवारसंकोचनअारस  
 लाचनअारसीसोंहै॥ अारजुवेसेसाजसोंअ  
 जसभूलिगईपियकान्हिकीसोंहै॥ ६८॥ **इतिस्व**  
**कीया॥ अथपरकिया॥** सवतेपरपरसिद्धजगता  
 कीप्रियाउहो॥ परकीयातासोंकहेपरमपुरमेंले  
 ॥ ६९॥ **परकीयभेद॥** परकीयादेभांतिकीउठाए  
 कअनूठ॥ जिनहिदेविसनिहोतसोंसंततमूठहै  
 अमूठ॥ ७०॥ **अथकुटीअनूठालछिन॥** कुठाहो  
 विवाहिताअविवाहिताअनूठ॥ तिनकेकहोंविला  
 ससवकेसवगूठअगूठ॥ ७१॥ **कुठालछिन॥** वेडीस  
 धीनकीसोभोसभासवहीकेसनेननिमांमिवसो  
 वृंहेवातवनारकहेमनहीमनकेसवरासहैसो  
 षलतहैतषलतेपियवित्रबिलावतयाविलसे  
 लाजुजानेनहीइगदौरिकेवेकितेहैहरिअननछे  
 निकसे॥ ७२॥ **अनूठालछिन॥** वेडीदुतीरजनानि  
 मेंवनिअावषभानकुमारिसभागा॥ षलतहीसवि  
 कोपरिबालनईतिहवेलषरीअनुरागी॥ पाछेतैके  
 सवबालिउदेसुनिकेवितवाअरीअतरीजागी जा



उत्तमायक हय हनायने ॥ १ ॥ चारि चकोर दिलो को ॥ १ ॥  
॥ सो जगदीश सनारीः सरविज जिगर हाति गो कुल मे सं बह ॥  
॥ जकि चंद कडी ॥ ७१ + १

८

नैन को उ कवे हरिके सर मार ग हा सर सी इग लागा ॥  
का ह सौ न कहे कछ वात अ नू ठा गूठ ॥ स बी स हे ली  
सौ कहे उठा गूठ अ गूठ ॥ ७२ ॥ जग ना इ क की ना इ का  
वर नी के स व हा स ॥ ति न के दर स न र स क हं स नि प्र  
छं च प्र का स ॥ ७४ ॥ इ ति श्री म न म हा रा ज कु म र अ  
इं ड जी त वि र चि ता यां र सि क प्रि या यां स्व की या पर  
की या व न नै ना म त्रि ति य प्र भा वः ॥ ३ ॥ अ थ दर स  
न ल छि न ॥ रा हो उ र से र स हों हि स कां म स री र  
र स न चारि प्र का र को व र न त हें क वि धी र ॥ ७५ ॥  
क जु नी के हि रे धि र ह जो र स न वि त्र ॥ ता जो स प ने  
रे धि ये चै यो ष व न नि मि त्र ॥ १ ॥ सा सा त दर स न ॥  
ना र भू ष डु ति दे ह का ग ई स न त ही जा हि ॥ को जा ने  
हैं हें क हा के स व रे धे ता हि ॥ ३ ॥ रा धि का को प्र छं च  
सा स ॥ दर स न ॥ चं ड क ला छं र ॥ क हि के स व श्री  
व ष भां न कु मा रि सिं गारि सिं गार स वे सर से ॥ स वि  
ना स चि तै ह रि ना इ क तों र ति ना इ क सा इ क से व  
से ॥ क व हं मु ष रे व त र्प न में उ प मां मु ष की लु ष मां  
पर से ॥ ज नु ग्रं न द कं द स प्र न चं र दु ह्यार वि मं ड  
ल में दर से ॥ ४ ॥ रा धि का को प्र का स सा सा त दर स न  
॥ पहि ले त जि ग्रार स ग्रार सी रे धि य र क घ से घ न सा  
र हि ले ॥ उ नि पों छि गु ला व ति लों छि फु ले ल गुं मों छे  
में अ छे अ गू छ नि के ॥ क हि के स व मे र ज वा मि सो मां दि  
जि ई तै पर ग्रं छि में अं ज न रे ॥ व डु ह्यो दु रि रे धि जो रे धो  
तो रे धि रा ला ज तो लो च न ला गी ये हे ॥ ५ ॥ क र्म को  
प्र छं च सा सा त दर स न ॥ भा ल गु ही गु न लाल ले  
ल प री ल र मो ति न की लु ष रे नी ॥ ता हि वि लो क त ग्र  
र सा ले क रि ग्रार स में इ क सार सि नै ना ॥ के स व कां न  
दु रं र सी पर सी उ प मां म ति सों अ ति पे नी ॥ स्म रि ज न  
उ ल में स सि मं ड ल म ध्य ध सा म नों ता हि त्रि वे नी ॥ ६ ॥  
श्री क र्म को प्र का स सा सा त दर स न ॥ इ क तो न र ग्रार  
उ रोज अ नू प मे ते से म ने हर हा र म हा री ॥ ल वि वि त्र च



लेत रुना नहं को तसु नैन की के सव वात कहारी ॥ हि  
 त सों हित की कहि ही परि आ वति को ल गि हों उरी  
 को ति गहारी ॥ अ व अ व ल दे न र लाल वि क तर र धि ले  
 नोषा विलो वन हारी ॥ ७ ॥ **आ रा धिका को प्र छं त्र चित्र**  
**रसन ॥** चित्र हू में हरि भिन्न की अति विचित्र गति गू  
 ठ ॥ प्र ग र का म को क ल्प त रु क हि न जा र म ति मूढ  
 ॥ ८ ॥ **लोचन अं चित्ता येश त कौ मन की म ति ज घ प ने**  
**हन ही है ॥** आ न न आ य ग र म म सी कर रो म उ ठे उ र  
 कं प ग ही है ॥ ता सों क हा क हि स क हि के स व ला ज स मु  
 इ में ब्र डि र ही है ॥ चित्र हू में हरि भिन्न हि दे ष त यो स कु  
 चा म नों वां ह ग ही है ॥ ९ ॥ **आ रा धिका को प्र का स चित्र**  
**रसन ॥** के सौ रा स ने हर सा दी य क स जो ई के सैं जो ति ही  
 के ध्या न त म ते ज हि न सा ई है ॥ अं धि न सों वां धे अं न  
 का ह की बु री ब भू ष या नी की क हां नी रां नी या स को  
 बु ग द है ॥ रा मे रा ई मु षा ई दा व र नैं नी ल षे ई दि रा को  
 मे रि रे मं स प ति सि धा ई है ॥ अं मे दि न अं सैं ही ग वा व ति  
 ग वा रि क हा वि त्र दे षे मि त्र के मि ले को स ष या ई है ॥ १० ॥  
**आ क र्म को प्र छं त्र चित्र रसन ॥** रु ठि वे कों त रु ठि वे को  
 मृ दु मु स क्पा ई के विलो कि वे को मे र क छू क घा नं पर त  
 है ॥ के सौ रा स वो ले वि नु वो ल नि के सु ने वि नु हि ल नि मि  
 ल नि वि न मो हि के पा स र त है ॥ को ल गि अ रो नो रू प या ले  
 श या रा षों नैं न नी र दे षे मी न के सैं धी र ज ध र त है ॥ चित्र  
 नी वि चित्र कि न ना के हा चि ते जे म ने चित्र मे तो दे षे चि  
 त चौ गु नों ज र त है ॥ ११ ॥ **आ क र्म को प्र का स चित्र र**  
**सन ॥** अं तरि छ ग छ न नि ज छि नी स ल छि नी नि आ छी  
 आ छी अ छि नै न छ वि छ म नी ये है ॥ कि त्र री न रा स ना रि प  
 न गान गी कु मा रि आ सु री सु रा नि हू नि हा रि न म नी ये है  
 भो ग न की भा म नी यो दे ह ध रें दा मि नी यों का मि नी यो क काम  
 हां अं सी कों मं क म नी ये है ॥ चित्र हू में चित हि व रा सें ले ति  
 के सौ रा स म की सी र म नी र मां सी र म नी ॥ १२ ॥



९

यमप्रदरसन॥ दोहरा॥ केसवदरसनसुप्रकोसरादुर  
 त्पारिहो॥ कवहंप्रगदनदेधियेयहजानेसवको॥ १३  
 ॥ श्रीराधिकाकोसप्रदरसन॥ आतरहेउठिहोरिअली  
 जनआतरजोगहिअसगहीये॥ केहोमेरीरोनीकहा नोहि  
 भयोतोकडुवृत्तकेसववृत्तिअज्यो॥ राटिलगीकि  
 भोपेतलज्यो किलज्योउरपीतमजाहिडरीयो॥ अंन  
 नसीकरसीकरंसीकहिसधकसोवतेतेअकलारउठी  
 के॥ १४॥ श्रीकृष्णकोसप्रदरसन॥ नषपरदवीको  
 पावेयंदीपदानएकोविसौउरवसीउरमेंनआनिवी  
 लोमसीपुलोमजानतिलसीतिलोतमानमेंनेहस ल  
 मानमनमेंनकानआनिवी॥ जानियेनेकोनजातिअ  
 वहीजगारोजातिजानुजांनिहो जवाहियोहीपहिवा  
 निवी॥ वातकसीवांनीमांहभीवसोभवानीमीहाके  
 सोराइरतिमेंरतीकजोतिजानिवी॥ १५॥ अथअवन  
 दरसन॥ श्रीराधिकाजीकोप्रछत्रअवनदरसन॥  
 सोंहदिवारदिवारअलीकवारहिकाननिआनिइव  
 सा॥ जानेकोकेसवकाननितेकितहेकवनेननि  
 मांरुसिधार॥ लाजकेसाजधरेरिहेसवनेननलेमन  
 होसोमिला॥ केसीकरोंअवकोनिकसेरीहरेहीह  
 रेहियमेंहरिआ॥ १६॥ श्रीराधिकाजीकोप्रकासअं  
 अवनदरसन॥ कोलोपीअुकनरसरूपकीबुनेहैया  
 सकेसोरासकेसेनयननभरिपीजिय॥ वीरकीसोमेरी  
 वीरवारीहेतवारीआनिनेकहसिहाकहिवलाइतेरी  
 लीजिय॥ वरसकमाहयहवैसअलवेनीवीतेदेहो  
 सुषसधितकोअवहीनहीजिय॥ सरीलउवावरी  
 अहारीअेसेवगोतोहिनाहीसोसनेहकरिनाहसो  
 कीजिय॥ १७॥ श्रीकृष्णकोप्रछत्रअवनदरसन॥ लं  
 घतेहेलोकालोकाकलीकनउलंघीजाइसवहीतसमु  
 गावेतोहिसमुगावेको॥ छाउनकहततनुतनकन  
 छरेलाजधनमातराविरोउकोविहकहावेको  
 चकोसंकेउहकोप्ररतपहिमयंकाकोसोरास



काल के जन धोवे को दुष सुष हरि हरि हूते मेरे म  
 न जे सा सुनाते सी तो हि आ धिन दिषो वे को ॥ १८ ॥  
 श्री कृष्ण को प्रकाश वन रसन ॥ नियत कपट ह  
 स् प्रेम को प्रगट करु वी रै व सेव सी कह के से उर अनिये  
 काम को प्रहरषनु कामना को वरषनु का नू को संक  
 रषनु सब जग जानिये ॥ किंचे कि सो दास महि मो  
 हनी को भूषन है किधों व वें ज वोलनि को हूषन वषा  
 नियो ॥ सुनत ही कूटो धाम वन वन डोले स्याम राधे ते  
 रोनाम कि उचार मंत्र मानिये ॥ १९ ॥ हर सखें सुख म २२  
 नीन के कह परम रमनीय ॥ प्रगट प्रेम प्रभावे अव  
 कहों कछू कमनीय ॥ २० ॥ इति श्री मन्महा राजकुमा  
 र श्री इंद्रजी विरचिता या रसिक प्रियायां प्रकृत प्रकाश  
 रसन नाम चतुर्थः प्रभावः ॥ ४ ॥ अथ नायक ना  
 यका चेषा वर्नन ॥ दोहरा ॥ तिन के चित की जो निसा  
 धि पिय सों कहै सुनाय कहै सखी सों प्रीत महि आपन  
 ते अकुलाय ॥ १ ॥ श्री राधिका की सखी को वचन कृष्ण  
 प्रीति ॥ काहि की जालि तौ आ जडु लोन सम्हारति  
 के सब के सेंह रहे ॥ सीरी के जाति उटे कवहुं जरि जी  
 वर धोकि रहि रुचि रहे ॥ कोरि विचार विचारति है उपचा  
 रनि के वर सें सखी मे है ॥ काहु बुरो जिन मानोति हारी  
 विलोकनि में विस वास विसै है ॥ २ ॥ श्री कृष्ण को वचन  
 राधिका की सखी प्रीति ॥ मे उने के रधी छी निलीयो सो  
 उ नै उ नै रो सऊं हो है ॥ सो अब हनौ दिवावो किंचो गु  
 नां जे सो कछु उ नै न क हो है ॥ वृक पशु व क सा वस  
 के सब मे उ न को वहु दुष दयो है ॥ लेहि मिला रमिला  
 उहि ज्यो सविते रे ग हो मन मे रो ग हो है ॥ ३ ॥ व्यास के  
 रही उ रास भाजी भूष गरी वास के सो रास नीरं की  
 निहानि त ठां नो है ॥ मति को मतौ न ले वि विरा  
 इरे सो भासु की सेर सेर स सुष सीना ॥ वस सेल  
 गत गीत के लिकी न परतीति प्रीति उर पाहुनी सी पवि  
 रहवां नो है ॥ तो विनु कहै का गाथ ॥ जन न के साध मो



१० हिकोमिलोवेहायलाजकेविकानोहे ॥ ४ ॥ पियसोंप्र  
 गहनप्रतिकदुजितनेकरहिउपास ॥ तेसबकेसव  
 दासअववरनोसबनिसुना ॥ ५ ॥ जवचितवेपिय  
 अनतहातवचितवेनिरसंक ॥ जानिविलोकेआ  
 पत्योअलिहिलगावेअंक ॥ ६ ॥ कवहंश्रुतिकंडूक  
 रेआरससोंअंडारकेसवदासविलससोवारवार  
 जभा ॥ ७ ॥ मूटेहाहसिहसिउंटेकहेससोसात  
 असेमिसहीमिसप्रियपियहिरिषोवेगात ॥ ८ ॥  
 योहीपियपियानिप्रतिप्रगटतअपनाप्रति ॥ सोप्र  
 छन्नप्रकासकरिबुधिवलकरतसमीति ॥ ९ ॥ राबि  
 काकीप्रछन्नवेष्टा ॥ वोरिवोरिवितवितवतमुदुमे  
 रिमोरिकाहेतेहसतिहीयेहरषवद्योहे ॥ केसौरा  
 रकीसोतजभातकहावारवारवीराबाहमेरीवीर  
 आरसजोआयोहे ॥ अंडेसोंअंडातअतिअंचलउडा  
 तउरउरेउघरिउघरिजातगातछविछायोहे ॥ फूलि  
 फूलिभेरीतरहतिउरमूलिभूलिभूलिभूलिकहतेकछ  
 तेआजपायोहे ॥ १० ॥ राबिकाकीप्रकासवेष्टा ॥ मेरी  
 मुदुचंमेतेरीपूजीआसचंमिवेकीवाटेआसआस  
 केसौरातपासडाहे ॥ छोरेछोरेकरकहाछावतछ  
 वीलीछातीछोवेजाकेछरवेकेअभिलाषवाहे ॥ ये  
 लेंजोआरहोतोबेलोसेबेलियतकेसौराकीसोते  
 तकोनबेलकाहे ॥ फूलिफूलिभेरीतिहेमोहिकहामे  
 रीभूभेरीतिनजाजवेभेरीवेकोढाहे ॥ ११ ॥ श्रीकृष्ण  
 कीप्रछन्नवेष्टा ॥ छोरिछोरिवोपागआरससोंआ  
 रसालेआनतहीआनभातिरेषतअनेसेहो ॥ तोरितो  
 रिडारततिनूकातुमकोनयरकोनकेपरतयावावरे  
 ज्योअसेहो ॥ कवहंश्रुकीरेतवटकिषुजावोकोनम  
 टकिअंडातजुरीजोभातजेसेहो ॥ वारिवारिकोनपु  
 र ॥ गलामोहिगनतकछूकोकछूआजिकान्हके  
 सेहो ॥ १२ ॥ राबिकाकीप्रकासवेष्टा ॥ जोलमिलाचल  
 गारिरेरिननावनवावतसाकपहाऊ ॥ केसवमंत्रकरेवस  
 कारकहारकजडकालोगनोक ॥ हारिरेहहिकोहंसि



लानमिलां जुं जो ताहि तो मांगो साया जु ठाढ़ी वेजा  
मिलो मिलि वेक दुआर कहा कनियो करि लाउ ॥ १३ ॥  
॥ अथ स्वयं दत्त वल्लभिन ॥ सोहरा ॥ जो वेणो हन मि  
ले कहुं के सव दोउ रीति तो तव अये नै आपही बुधि  
वल हो ही वसीठ ॥ १४ ॥ श्री राधिका को प्रहृष्ट स्वयं  
दत्त ॥ हरतें रेखि वे को देखे हो दान मनाई दुता लिखि  
हा लिखि वाढा रेखि मिले मन होइ मिली मिलि धे  
लिवे हं की मिला मति माढा ॥ ऐसे में और चलाइ हो के  
सव के सैं हं कां नु मारे रे रीठा ॥ देखे न वार मृनाल  
के तार लोह टेंगी लाल हे में तम रीठा ॥ १५ ॥ छुवो जिन  
हाथ सो हाथ ही ये यल हाय लवाठ तपे मकला न जा  
निये जी मे कहा वसि जा रचले पुनिके सव को न चला  
भले ही भले निवहे जु भली यह रेखि वे ही की हलार भ  
ला ॥ मिलि मन तो मि वोर कहा मिलि वोन अ लोक दु  
ने रल ला ॥ १६ ॥ श्री राधिका को प्रहृष्ट स्वयं दत्त  
तव ॥ धारन ही घर राई परी जर आई है आई का आरि पित  
धिव हो अ पोरिये आवें रसो धोइ ते पर ऊवो सनें सम  
हा दुषया अ कां नु न वेर दुन्या यन यो रन अ लिन को  
लगि हो वहरा अ मो संग सव सोवन अ वे कि हो रन  
के संग सोवन जा अ ॥ १७ ॥ श्री कृष्ण को प्रहृष्ट स्वयं  
दत्त ॥ आपनै हा भाय के सोहत सरी कसे वे के सो  
रास हास ज्यो चलत वितरी नै है ॥ आयही अ गी अ टा  
कत लेत नां म मे रो वे तो वा पुरे मिलाय के सलाय क  
रि ही नै है ॥ राधे को सुनाइ के कहत अ सैं घन स्यां म  
सवल को ले ले नाम कां म भय भी नै है ॥ साधिले  
सखानि अ व जे वो वन छाडो हम रेखि वे को सं  
ग सरवा साखा ग का नै है ॥ १८ ॥ श्री कृष्ण को प्रहृष्ट  
स्वयं दत्त ॥ वन जे जे चलो को उठा ली है के सव  
हेतु महेत अ गी अ रि हो ॥ कछु बे लिये लन आव  
न अ ज भूतान भूतान गो रे प रि हो ॥ हित हे हिय मे



किधौनाहीतऊहितनाहिहीयेतोललालरिहो हम्  
 सोंयहवृत्तिऐसीकहोजूकहीतो कहीवकहाक  
 रिहो ॥ १९ ॥ केसोरासघरघरनाचतफिरतजोयसकपरेछ  
 कितेमरेगनियतहै ॥ वारुनाकेवसवलराकुभसस  
 रवासवसंगलेकोजेरुषसासधुनियतहै ॥ मोहितोग  
 सहीवनेहीहरीपमालापाशासनसवारिवेकौचितवु  
 नियतहै ॥ जोवनसौनेनलोलवावरेभरहैसवपरि  
 कषरेआजसूनेसुनियतहै ॥ २० ॥ **हीहा ॥ ऊठापु**  
**निहमातिहैवदुविधिहितनिजना ॥ आपनहीतेला**  
**जतजिपियहिमिलेअकुलार ॥ २१ ॥ अथऊठाअकु**  
**लावनसखाधनि ॥** यद्यनथकितपलमनोरथरथ  
 निकेकेसोरासजगमगजेसंगासगीतमें ॥ युवनविचा  
 रचक्रचक्रमनचितचठिभूतलअकासभवेधामज  
 लसीतमें ॥ कौलौरोषोथिरवपुवायीकूपसरसमह  
 रिविनकीनैवदुवासरवितातमें ॥ ग्यानगिरिकारितो  
 रिलाजतरुजारमिलोआपहीतेंआपगाज्याआपनि  
 धिपातमें ॥ २२ ॥ **अथऊठासयदतव ॥** जातिभईसं  
 गजातिलेकीरतिकेसवहैनुलसोंहितफूटोगव  
 गयोयुनजोवनरूपकोपुन्यसोतोपलहीपलपूछो  
 कांनूतिहारयेआनकीयेकहंलाजकोनाकैहैना  
 तोइहयो ॥ छाडोसवैहमहेरितुहैतमयेतनकोक  
 परोनहिछूयो ॥ २३ ॥ **हीहा ॥ अधिकअनूठालाज**  
**तेपिययेजाइनआप ॥ क्योहंकरिसधिरकहेताकेउ**  
**रैकोताप ॥ २४ ॥ अथऊठाकेमनकोताप ॥ कसप**  
**तिसधीकाववन ॥** जोनेकोकेसवकोनेकसाकव  
 कांनूहमारहिडोरनिरूले ॥ शननघाशनयांनोपीवे  
 तवतेभरिआधिनलेतसमूले ॥ जीहुनहीवतिवेगित  
 लारवोलेइसकेलिकहाइतभूले ॥ जोनतहोउहको  
 मकलीकुहिलारगयेवदुखोफिरिफूले ॥ २५ ॥ **अथ**  
**अथममिलनयावनतन ॥ हीहा ॥ जनीसहेलपा**  
**इधरसनेधरतिसचार ॥ अतिभयउत्सवजा ॥ अतिभ**



नोते सबन विहारार्थ। इनही दोरनि होत है प्रथम  
मिलन संसार। केसव राजा के केर विराघ्या कर  
त। १७॥ **जनी के घर को मिलन**॥ भेष के कुमारि  
का कौबज की कुमारिका निमो रसोर के सो रास  
नास पग यो लिके। काम काल ता सा चले पे मपा  
सा सी अमल राधिका के वृधिवल कंठ भुज मे  
लिके। दोर दोरि दुरि दुरि दोरि दुरि अभिलाषुला  
बलाष भांति की अनूप रूप के लिके। जनी के अ  
जिर आ जिर जनी में सजनी सी सांची करी स्पाम चो  
र मिह चनी धेलिके। १८॥ **सहेली के घर को मिलन**  
॥ नैननिके तारे नमें राघो प्यारे पुतरा के सुरली ज्यो  
ला राघो रसन वसन में। राघो भुजवी चिवन माली  
वन माल करि चंदन ज्यो चतुर चटा राघो तन में  
के सो राइ के लंक राघो करि कंठुला के करम करम  
के पाहुं आनी है भवने में। चंपक कली ज्यो कान्हू सं  
धि सुधि देवता सीले दुमै लाल न्है मे लिह राघो म  
न में। १९॥ **पाइ के घर को मिलन**॥ हसत बेलत पे  
लमं रभई चंदु तिकहत कहानी अरु वृत्त पहेली  
जाल। के सो रास नीरव स आ पने आ पने घर हरें ह  
रें उठि गई बालिका सकल बाल। घोरि उठे गगन स  
घन घन चडु रिसि उठि बले कान्हू धोखो लिउरी।  
तिही काल। आधी राति अधिक अंधारे में कहं जे ह  
होराधिका की आधी से जसो यर हो प्यारे लाल। ३०  
**सने घर को मिलन**॥ रेषत ही विज आ जसनी वि  
बसा लावा लारूप की सी माला राधारूप क सहार  
री। नूपुर के सरनि अनूप रूपता ने लेत पगत लता  
लहेत अति मन भासरी। ओ से में दिवाई रानी ओ  
चको कुवर कान्हू जे से भगता ते से जात नवतार  
री। केसव कहन परे अलज सलज से वै जलज से लो  
चन जल रसे है आसरी। ३१॥ **निसि**



ना॥ एक समे सब देष न गोकुल गाय गुण लस मूह  
 सिधास॥ राति है आरि वलै घरे को दस हं दिस मे हं घ  
 महामठि आस॥ दस रो वलै तउ समु नही के स  
 वया छित मै तम छास॥ ऐसे मै रंग म विवै गा वि  
 रा कै लई उर लार की समन भास॥ ३१॥ **अति भय**  
**को मिलन॥** जानी आगिला गी वष भान जू कै नि  
 कर भो हो रि वज वासी चठे चहं दिस धाय के॥ जहां  
 तहां सोर भारी भार नर नरिन की सव ही की छुटि  
 गई लाज हाय भाय के॥ ऐसे मै ऊवर कां न्ह सोर  
 सक वा हरि के राधिका जगाई और जुवती जगाइ  
 के लोचन विसाल चारु चिबुक कपोल चूमि चपे  
 की सीमालावाला लीनी उर लार के॥ ३२॥ **वत्सव**  
**को मिलन॥** बाल की वर सगी ठिता की गति जगि दे  
 को आरि वज संदरी सवारित न सो नौ सो॥ के सो रास भी  
 र भई नंद जू के मंदिर न मध्य अर्ध उध वधो न कहूं को नौ  
 सो॥ गावत वजावत न वत नौ नाना रूप करि जहां तहां  
 उमगत आनरे को आनौ सो॥ सावरे की सुनी से ज सो व  
 त ही राधिका ज सो र आनि सावरे उमानि मन गो नौ सो  
 ॥ ३३॥ **व्याधि मित्र को मिलन॥** सो धिनि दान निदान  
 ही उपचार वचार की अनधिराना॥ वेद के सासन बाधिवि  
 नासन हो मै दुतासन हन हिराना॥ के सव वेगि वलौ व  
 लिति ही न भई वष भान की रानी॥ आर हो मै हिम रु करि  
 के व दुखों उन के उह पीर पिरानी॥ ३४॥ **न्याते मित्र को**  
**मिलन॥** न्याते के बुलाई दुता वेरी वष भान जू की जे वेर  
 को ज सो दाराना आनी है सिंगारि के॥ भोजन के भवन विलो  
 किवे को पान वात उपरि अके लागई आनर विचारि के॥ दे  
 षतरे षत हरि भावते को भाग रे वि हो रि गही बाल ऐसे सी  
 वे नौ रुडारि के॥ भरी भरि अक मन भायो करि छाया मुड  
 के सरि सोमा डोलै वे सरि उतारि के॥ ३५॥ **वन विहार**  
**को मिलन॥** देर धिका ल्हि गई कहि दे न पसारु गो र भो



फुनिफेटी। छोड़ो नही मरुछाश्रोजुजादुछडावो विलोक  
 निलाजलपेटी। वातसम्हारिकहो सुनिहै को कुजान  
 तेहो रह को नकी वेटी। जानते है वषभानकी है परितो।  
 दिनजानते को नकी वेटी। ३६। हरिराधिका मानसरोव  
 रके तट दोटरी हाथ सौ हाथ छिये। पियके सितपाग प्रिया  
 मुकता छुराजत माल दुहं के हीये। कारके सबका छि  
 नीसे तक से सबही तन चरन धोरि कीये। निकसे जनु  
 छीरस सुहृते संग श्रीपति मान दुखी हिलीये। ३७।  
 जलविहारका मिलन। रितु श्रीषमकी प्रतिवीसर  
 के सब बेलत है जसुनी जलमें। इत गोपसुता उह्या  
 रगुपाल विराजत माल निके गनमें। अति बूडत है ग  
 तिमी ननिकी मिलिजार उठे अपने छलमें। ३८।  
 तिमनोरथ प्रीति उजन हरि रहे छवि सौ छलमें। ३९।  
 ॥ दोहा ॥ इह विधिराधार वन के वरने मिलन विसेषि।  
 के सब रास विलास वहु। बुधिवल लीजि दुलैषि। ३९  
 इति परकीया ॥ दोहा ॥ और जत रुनी तीसरी को वर  
 नों इह दोर। रसमें विरसन वरनिये कहतर सिक सिर  
 मोर। ४०। प्रथम मिलन छलमें कहे अपनी मति अच  
 सार। हावभाव वरनन कीरो सुनि अववदुत प्रकार।  
 ४१। रसवजित नीना का वरनी मति अनुसार। के सब  
 रास वषा निअव बुधिवल आव प्रकार। ४२। इति श्री  
 मत्स्यपुराण कुरुक्षेत्रादिजीत विरचित पौरसिक  
 प्रियाय प्रियापिय चैव वने ननो मय वन प्रभाव  
 ॥ ५॥ दोहा ॥ आनन लोचन वचन मग प्रगट मनकी  
 वात। ताही सौ सब कहते हैं भाव कविन के तात। १  
 भाव जो पंच प्रकार के सुनि विभाव अनुभाव। स्थावी  
 सात्विक कहते हैं विभवारी कविराव। २। विभाव लो  
 न। ३। जिन ते जगत अने कर सप्रगट होत अनयास  
 तिन सौ समति विभाव कहि वरनत के सौरास। ३। सो वि  
 भाव है भाव है भाविके के सब रास वषांनु। अवल वन  
 इक दूसरे उही यन मन मानु। ४। जिहै अनुन अवल व



१३ **सि** अलंवनजानि **॥** जिनते रापति होत हे सो उद्दीपवषा  
 नि **॥** **अ** लंवनस्थानवर्नन **॥** **छ** प्य **॥** रं पति जो  
 यन रूप जाति लछिन सुत सविजन **॥** को किल कलित वस  
 २४ **अ** त फूल फूलै ल अलि उपवन **॥** जल चर जल जत अम  
 ल कमल कमला कमला कर **॥** वात कमोर सुस हत  
 डित घन अं बुद अं वर **॥** सुभसे ज राप सो गंध दृढा नग  
 न परिधान मनि **॥** नवनृत्य भेद वीना रिस व अलवन के  
 सवर नि **॥** **३** **उ** द्दीपन लछिन **॥** **द** हा **॥** अ व लोक  
 नि आलाप पुनि परिं भन न रं दान **॥** पुवना दि उद्दी हे म **प**  
 रदन पर स प्रमान **॥** **७** **अ** नु भाव लछिन **॥** आलंवन  
 उद्दीप के जे अनु करन प्रधान **॥** ते कहिये अनु भाव सव  
 नि रं पति शि विधान **॥** **८** **आ** वा भाव लछिन **॥** अति सहा  
 स अरु सो क पुनि को ध उछाह हि जा नि भय निरा विस्मय  
 २५ **व** सहित स्थान भाव वषा नि **॥** **९** **सा** त क भाव **॥** त भ से रो  
 मां च स्तर भंग कं प वे वर **॥** अ सु प्र ला य सु स वे भाव आद  
 सु भ वर **॥** **१०** **वि** भ चार भाव **॥** भा उ जो स व ही र स नि मे  
 उप जत के स वरा **॥** विना निय म ति न सो कह ते वि भ च  
 एक विरा **॥** **११** **नि** र्वे दं ला नि सं का त था आ ल से न्य स  
 २६ **स** मो ह **॥** स्मृ ति ध ति डी डा व प ल ता धे म द म चि ता को हे **॥** **१२**  
 ग वे हर स आ कं प पु नि नि रानी र विषा **॥** ज उ ता उ त कं द  
 सहित स्व प्र प्र बो ध वि वा **॥** **१३** **अ** प स मा र म ति उ ग्र ता  
 आ स त के अ ति वा धि **॥** उ म्मा र क म र म द न भ य आ धि  
 वा रु स स मा धि **॥** **१४** **अ** ति भा व अ य हा व ल छि न **॥** प्रे म  
 आ रा धा कृ म को ता ते हो त सिं गा र **॥** ता के भा व प्र भा व ते उ  
 प जत हा व वि वा **॥** **१५** **अ** य हा व न म **॥** हे ला ली ला  
 २७ **वि** ल लित म र वि भु म वि ह त वि ला **॥** किल किं चित वि छि  
 त अरु कहि छि क प्र का स **॥** **१६** **मो** रा य त पु नि कु द्दी मि त  
 बो ध का दि व डु हा व **॥** अ य ने अ य ने बु धि क ल व र न ते हे **व**  
 क वि रा व **॥** **१७** **अ** य हे ला हा व ल छि न **॥** पू र न प्रे म प्र  
 ता य ते भू ल त ला ज स मा ज **॥** सो हे ला जि हि र त म न रा  
 धा श्री ह ज रा ज **॥** **१८** **आ** रा धा ज को हे ला हा व **॥** अ व **र**  
 लोक नि अं कु स अं वि अ नृ प स भू ज पा सि भं ले ग ल मे ली **१९**



मृदुहाससवासउठाइमिलीवहेजोन्हकाजोमिनिमा  
ऊअकेली॥अधरारसप्याइकीसवसकेसवरायकरीर  
तिरातिनवेली॥वनमेंसबभानसतासबहीहरिकों  
हरिलोगहितांहिहेली॥१७॥**श्रीकृष्णजकोहेला**  
**हाव॥**वैनसनाखुलारलईतवभोनभुलारकेंभाति  
भलीकें॥फुलिगयोमनफूल्योविलोकतकेसब  
काननरासधलीकें॥अधरारसप्याइकीयोपरिरे  
भनचुवनकेसुषकामकलीकें॥हेलाहीश्रीहरिना  
गरआजुहसोमनश्रीसबभानललीकें॥१८॥**अथ**  
**लीलाहाव॥**करतजहालीलानिकोंप्रातमप्रायाव  
नार॥उपजतलीलाहावतहावरनतकेसवराइ॥१९॥  
**श्रीराधाजकोलीलाहाव॥**पारनिकोंपरिवोअपमा  
नअनेकसअयानसोमानमनैवो॥केसवचोंकिचहूँ  
हिसचाहिवोजूहोतमोरुषवायवोषेवो॥दरकुचील  
निउपरिपोहिवोपांनहिकेपरकेंभगिअवो॥आवि **रि**  
नमूहिकोंसीषतिराधिकाकुंजतितेंप्रतिकुंजनिजे  
वो॥२०॥**श्रीकृष्णजकोलीलाहाव॥**जाकिओषनिमें  
मनैचठिउवेअवासनिरेषनधावे॥निहितगोपवरि  
वनकोंकहिकेसवधानकरेगुनगावे॥चित्रितचित्रमें  
आपनयोअवलोकतअनरसोउरलीवे॥आगनेतेंप  
रमेंघरेतेंफिरिआगनवासरेकोविरमोवे॥२१॥**अथल**  
**लितहावलछिन॥**बोलनिहसनिविलोकिकेवोचल  
निमनोहररूप॥जैसेतैसेवरनियेललितहावअनरु  
प॥२२॥**श्रीराधिकाजकोललितहाव॥**कोमलविम  
लमनविमलासीसरवीसाथकमलाज्योलीनेहाथ  
कमलसतालके॥नुपुर्कीधुनिखनिभोरैकलहसनि  
केंचोंकिचोंकिपेरैवाहचैरामरालके॥कचनकेभारखु  
बभारनिसकुचभारलचकिलचकिजातकरितरवा  
लके॥हरेहरेबोलतिविलोकतिहसतहरेहरेहरेचल  
तिहरतिमनलालके॥२३॥**श्रीकृष्णजकोललितहा**  
**व॥**चपलापदुमोरकिरीटलसैमघवाघनसोभवदाव



तहें। मृदुगावत आवतें वेन वजाव। तमित्र पूरन चाव  
 तहें। उठि देखि भटभारि लोचन चातक चित्र की तापव  
 जावतहें। घन स्याम घनो घन वेसों के सो वने वने ते  
 वज आवतहें। १६। **अथ मरहावल छिन। दोहा।** पूर  
 न ये मप्रतायते गर्व वेडे वडुभाव। तिन के तरुन विका  
 र ते उपजतहें मरहाव १७। **श्री राधा जूको मरहाव।**  
 छवि सों छवीली वषभान की कुवरि आ जुरही दुतीरु  
 प मरमान मर छुकि के। मारहते सकुमार नंद के कुमा  
 र ताहि आ मरी मनावन सयान सवत कि के। हसि ह  
 सितो हे करि करिया परियरि के सो राय की सो जवरहे  
 जिय जकि के। तिहा स मे उदे घन घोरि घोरि दामिनी सी  
 लागी लोटि घन स्याम उर सों लय कि के। १८। **श्री क**  
**मज्ज को मरहाव।** महि मोहना मोहि स के न सषाच  
 पलाच लचित्र वषान तेहें। रतिकार ति स्याह न को  
 निकारे दुति चंद कलाघटि जान तेहें। कहि के सव ओ  
 र की वात कहार मनीय रमा दुन मान तेहें। वषभान सु  
 ताहित मज्जम नोहर और हिडी दिन आन तेहें। १९। **अ**  
**थ विभ्रम हावल छिन। दोहा।** ताक विभ्रम ये मते न  
 होहो हि विपरीत। हसनर सतन मनर सित मति विभ्र  
 म के गीत २०। **श्री राधा जूको विभ्रम हाव।** करि के  
 तरहार लये टिली ये कि रिकि कनि ले उरें माई। करनू सो उर  
 पर सों पग पों चविना अगिया सधि अचल की विसरई  
 करि अज नर जित वाह कपोल करी जुत जाव के नैन  
 निकारि। सनि आवत घी हज भूषन भूषन भूषन भू  
 षित ही वरिधारि २१। **श्री कृष्ण के विभ्रम हाव।** नंदन  
 रन खेल तेहें विनिगात वनी छवि चंदन के जल की। वषभा  
 न कुमारि विलोकत ही रुचि चित्र म विभ्रम की मल की  
 गिरिजा तन जानत पात निघात विरी करिय कज के  
 दल की। विहसि सव गोप वध हरियोत किलोचन मूरि रम  
 दुग चल की २२। **अथ विद्वत हाव। दोहा।** बोलन दुं १४



के समय में तो लनरे पन लाजा ॥ विद्वत हावना सो कहत  
के सब कविक विराज ॥ ३३ ॥ **आराधन के विद्वत हा**  
**व ॥** मेरे कहें हि सखत उ फिरी श्री धर्म ज्यो हठिका ठरे  
हेगा ॥ ये रिको ये मस सुइ परा सक संकरें कृत को निव  
हेगा ॥ हों समरे सजना सगरी कव हं हरि सो हसि वात  
कहेगा ॥ पीचित की चित्र सारी चढी चित्र की पुतरी भ  
इ को लोरे हेगा ॥ ३४ ॥ **आराधन के विद्वत हाव ॥**  
के सब रासो आ ज सारी धर्म भान नुवारि उरा हनो  
री नो ॥ गीरि ईश्वर मातुई अरवि ईनि सो मनु के हि  
त ही नो ॥ सी वरई सुषणार लई उर लास गंध चढा  
इन वी नो ॥ उत्तर देश को नर कुमार कछु सिर नीचै  
ते उचो न की नो ॥ ३५ ॥ **अथ विलास हाव ॥ रोहा ॥**  
बेलत बोलत हसत अरु चित उत चलत प्रकास ॥ ज  
ल बल के सब रास कहि उपजत हाव विलास ॥ ३६ ॥  
**आराधन के विलास हाव ॥** किलकत अलकत  
तिलक चिलक मिस भौं हनि में विधम निभौं न भेदरी  
नो हो ॥ लोचन नि सोच नि संकोच नि नचावत न दस  
न चमक ही चकित चित की नो हें ॥ मरहास सुषवा  
स अनया सदा सक रिली नें के सो राजिय जघप प्र  
वा नि हें ॥ मोहन के तन मन मोहि वे को मेरी भट मेरे सु  
बल कहि अतंत वत ली नें हें ॥ ३७ ॥ **आराधन के वि**  
**लास हाव ॥** जिन न निहारे ते निहोरत निहारि वे को  
काहन निहारे ते न के से के निहारे हें ॥ सूरनर नाय  
नव कन्या न के शान पति पति देवता निहू के हिय  
न विहारे हें ॥ इह विधि के सो राश वरे असे व अंग  
उपमान उयजी विरंचिय विहारे हें ॥ रूप मर मोचन  
मरन मर मोचन हें ॥ तिय मर मोचन किलोचन तिहा  
रें हें ॥ ३८ ॥ **अथ किलकि चित हाव ॥ रोहा ॥** अम अ  
भिलाष सगर्वता को धर्ष भय भाव ॥ उपजत सका  
हि सा अजहानो किलकि चित हाव ॥ ३९ ॥ **आराधन**



जूको किल किंचित हावा को नर से विहसे लधि  
 को नाहिका परको पिके मोह चढावे ॥ भूलतिला  
 जमई के वहे कवहे सुष अंचल रे इरावे ॥ को नकी  
 लेति वलाश्वलाश्वो तेरी रसा इह मोहिन भोवे ॥  
 ऐसी वत्सक वहे नभ ईश्वर तो हिई जिनि वाइल  
 गावे ॥ ४० ॥ श्री कृष्ण जूको किल किंचित हावा ॥ ऐ  
 सी हे गोकुल के कुल की जिनि रछि नैन न करे अनु  
 कूले ॥ पंजन से मन रजन के सवहार विहार लता ल  
 गिरूले ॥ बोलै रुकै रुकै अन बोलै फिरै विरुके  
 से हिए महि फूले ॥ रूप भय सव के विस से अहो का  
 न्हक होर सको न के भूले ॥ ४१ ॥ अथ विच्छिन्न लछि  
 न ॥ भूषन भूषित को जहा होर अनार अनानि ॥ तिहि  
 विच्छिन्न विचारि सके सवरा सवधानि ॥ ४२ ॥ श्री  
 श्री जूको विच्छिन्न हावा ॥ के सव आपनो भासि गार  
 सिंगार नही ससि गार दयाही ॥ वज्र भूषन नैन निभू  
 वे है जाके सुतो ये सिंगार उतारि न जाहा ॥ सव होतु स  
 गंधा निही ते सगंध सगंध सगंध में जात सभाही  
 भूषन है सव तो ही ते भूषित भूषन ते तुम भूषित तो  
 ही ॥ ४३ ॥ श्री कृष्ण को विच्छिन्न हावा ॥ पान न घात  
 न पागर बीपल रे पर चित्र कहा धारिके ॥ कंठ सिरी  
 वन माल मनोहर हार उतारि धरे अरि के ॥ चंदन  
 चित्र विचित्र लोपि सलोचन लोलन सोलरि  
 के ॥ अंग सुभास सुवास प्रकासित लोपि हो के स  
 व को करिके ॥ ४४ ॥ अथ विच्छोक हावा ॥ रोहा ॥  
 रूप प्रेम के गर्व ते प्रगर अनार होइ ॥ तह उपजे वि  
 छोकर सयह जानत सव को ॥ ४५ ॥ श्री श्री जू  
 को विच्छोक हावा ॥ आवत जानिके सोइ रही हर से  
 हरि वैठे न जाति जगाई ॥ साहस के उर मध्य धर्यो  
 कहु जा गति रोमन की रुचि पाई ॥ नीवी विमोचत राम  
 चौकि उदीपहि चानि रुकी वतियां कहवाई वास ॥ १५



रागवारचरावतआवतहैंनिससेजपराई॥४६॥  
 श्रीकामजूकोविहोकाहाव॥ एकसमैकमोपीसो  
 केसवकेसैंहंहासीकीवातकही॥ जाकहुतातरईत  
 जिताहिकहाहमसौरसरीतिनही॥ कोप्रतिउसरदे  
 इसबाहुगम्यसनकीअवलीउमही॥ उरलाइलअ  
 कुलइतअधरातिकलौहिलकीनही॥४७॥ अथ  
 मोटायतहावा॥ हेलालीवाकरिजहांप्रगटित  
 सात्विकभाव॥ बुधिवलरोकतसोभिजेकहिमोटाय  
 तहाव॥४८॥ श्रीराधाजूकोमोटायतहाव॥ धेनत  
 हैंहरिवागेवनेंतहांवेढीप्रियरतितेंअतिलौनी॥ के  
 सवकेसैंहंणीठिमंडीटिपरीकुचकुंकुमकीरुविरों  
 नीमातसमीपवुराभलेतिनसात्वकभावनकीग  
 तिहौनी॥ धरिकपरकीपरिविलोचनसंधिसिरो  
 रुहज्यादीउहौनी॥४९॥ श्रीकामकोमोटायतहा  
 व॥ भोजनेकेहषभानसभांमहिबेदेहैंनंदसहासपका  
 री॥ जोपघनेवलवीरवचराजतषावनाशिरागिरिधात  
 री॥ राधाजूकावीरुषनिद्वेकहिकेसवरकिगिरैहैं  
 विहारी॥ सौरभसंसमूहैसबुंचेहरवाइकहीहरितागी  
 सपारि॥५०॥ अथकुहमितहाव॥ केलिकलहमेंसोमि  
 येकेलिकपरकदुरुष॥ उपजतेहेतहकुहमितहावक  
 हतकहतकविभूष॥५१॥ श्रीराधाजूकाकुहमितहा  
 व॥ पहिलेहठिरुठिचलीउठिपीठेमेंचितईसधितें  
 नलषीरी॥ वाधरेंहरिजूकीभुजानितेंछुटिवेकोबहु  
 भातिरुषीरी॥ कुचपीडनदंतनषछतचुवनवेरिनि  
 कीसरजारनषीरी॥ ताहीकोयांनषवावतिहेउतरी  
 कछुपीतिकीरातिसवीरी॥५२॥ श्रीकामकोकुहमि  
 तहाव॥ देखतहीजिनमोंनगहीअरुमोंननजीकदुवो  
 लउचारे॥ सौहैंकीसहनसौहैंकीयोमचुहारिपरेयेन  
 सवेनिहारे॥ हाहोकेहारिहेनंदनंदनयायपरेजिनि  
 लातनिमारे॥ मोउतहैंसुषताहीकोअकलैहैंकछुपेम  
 केपावनपारे॥५३॥ अथजोधकाहावा॥ गूढभा



वेकाधोषजहं केसव और हि हो ॥ तासो वाध क हव स  
 व कहत सयाने लो ॥ ५४ ॥ श्री राधाजी के वाध कह  
 व ॥ वेठी दुती वष भानु कुमार सवान की मंडली में  
 डिप्रवा नी ॥ लै कुहिलो नौ सो के जय रा क पा नि ग्रा  
 निगुवा लिन वा नी ॥ चंदन सो छिर को व हि वा कहि पा  
 नर स करु नार स भी नी ॥ चंदन चित्र क पो ल नि ले पिकें  
 अजन अजि वि हा करि दी नी ॥ ५५ ॥ श्री कृष्ण को वा  
 क हव ॥ सवि सो भित गो प स भा महि गो विंद वे ठे डु ते दु  
 ति कौ धरि के जनु के सव पूर न चंद ल से चित चारु च को  
 रन के हरि के ॥ तिन कौ उल टो करि आ नि रा यो क डु नी  
 रज नी र नु भ रिकें ॥ कहि का हे ते नैं क नि हा रि म नो ह  
 र को र द्यो क लिका करि के ॥ ५६ ॥ राधा राधार वन के  
 क हे ज य म ति हा व ॥ ठी ठी के सव रा स की छ मि जि  
 दु क वि क वि रा व ॥ ५७ ॥ श्री म न म हार ज क मार श्री  
 ५८ ॥ श्री त वि र चित पा र सिक धिया या हा व मा व व  
 न न ना म व म प्र भा व ॥ ५९ ॥ अथ अष्ट नाश का व  
 र ॥ ६० ॥ स स व जित नी नाश का व र नी म ति अनु सा  
 र के स व दा स व णा नि यो ते स व आ ठ प्र का र ॥ १ ॥ स्वाधीन  
 पति का उ त्का वा स क स ज्जा वा म ॥ अभि संधि ता व णा ॥  
 नि ये और षे डि ता ना म ॥ २ ॥ के स व प्रो धित प्रे य सी ल धा  
 वि प्र स आ न ॥ अष्ट नाश का स क ल अभि सारि का ल  
 ज न ॥ ३ ॥ अष्ट नाश न पति का ॥ के स व जा के गु न वें धो  
 स हार हे पति संग ॥ स्वाधीन पति का ता स कौ व र न त या प्र  
 सं ॥ ४ ॥ प्र लब्ध स्वाधीन पति का ॥ के स व जी व नि जो  
 ह ज कौ प्र नि जी व ह ते अति वा य हि भा वे ॥ जा पर दे व  
 अ दे व कु मार नि वार त मा न वार ल गा वे ॥ तो हरि पै ल  
 ग वार की वे रा म हा व र पा श्क वा श रि वा वे ॥ मि तो व ची अ  
 व हा सि न ही अ से और जो दे वे तो उ त र आ वे ॥ ५ ॥ प्र वा  
 स स्वाधीन पति का ॥ बो ली को सो पा न तो हि कर त स  
 वारि को र सु क र ज्यो तो हा म हि मूर ति स मा नी हे ॥ ते ही रा स  
 ति य दे व ता ये वा यो पति के सो रा पति नी व ह त पति दे व ॥ ६ ॥



तावकां नीहे तेरे मनोरथ भार थके पाछें पाछें डोलत गु  
 पाल में गंगा के सौ पां नीहे ॥ असी बातें कौन जुन माने  
 सुनि मेरी राखी उन के तौ तेरा चाना वेद की सी वानी है  
 ॥ ६ ॥ अथ उक्ता ॥ दोहा ॥ कौन हि हेत न आवे प्रीतम  
 जा के धाम ॥ ता कौ सोचति सोच जिय के सब उक्ता वीम  
 ॥ ७ ॥ प्रथम उक्ता ॥ कि धौं गृह काज कि धौं छुओ न सखा  
 समाज कि धौं कछु अजुत वासर विभाते तेरी नौ ते न सो  
 ध कि धौ का हसो भयो विरोध उय ज्यो प्ररोध कि धौं उर अर  
 राते ते ॥ सब में न देखे कि धौं मोह सों क परने ह कि धौ रे  
 ओ मे ह अति डरे अघराते ते ॥ कि धौं मेरी प्रीति की प्रती  
 तिले ते के सौ रा अजहं न आगमन सो धौं कौन वात  
 ते ॥ ८ ॥ प्रकास उक्ता ॥ सुधि भूलि गहि भुल सकि क का  
 ह कि भूले डोलत वारन पाई ॥ भीत भ सकि धौं के सब का  
 ह सों भेद भई कोऊ भांमिनि भाई ॥ आवते हैं कि धौं आग  
 रा कि धौं आवहि गोसजनी सब दाई ॥ अमन नंद कुमार स  
 धी सधौं कौन विचार अवार लगी ॥ ९ ॥ अथ कस कस  
 जा ॥ दोहा ॥ वास कस जा होर सो कहि के सब सविला  
 स ॥ चित वैरति गृह द्वार तो पिय आवन की आस ॥ १० ॥  
 ॥ १० ॥ अथ वास कस जा ॥ चंदन विरय वपु को मल अमल  
 रल वलित ललित लली लपटी लवंग की ॥ के सो दास  
 ता में दुरी दीप की सिखा सो होरि दु रावत नील वास दु ति  
 अंग अंग की ॥ पौन पौन पं धी पसवा स मे सब रजित  
 तित तित वौं कि वौं कि वौं हे वें पसंग की ॥ नंद लाल आ  
 गम विलोकि कुंज जाल बाल लीनी गति तिह काल  
 पंजर पतंग का ॥ ११ ॥ प्रकास स्वाध्याय नंदनिका ॥ भाष  
 ति है सब वैन सखी नि सों लावहि ये अभिलाष नि जो है  
 को मल हास नि नैन विलास नि अंग सवास नि कै म  
 न मो है ॥ मूरति वंत कि धौं तुलसी तुलसी वन में गति  
 मूरति को है ॥ कुंज विराजत गोप बधू कमला ज कुं  
 ज कुटी महि सो है ॥ १२ ॥ अथ अभिसंधि ना ॥ दोहा ॥

सी

वों



+ कल आतुहे ॥ एले पारे वायु हते मा-योन + ७

२७

मानमनावतहकहेमानरकोअयमानइनोंदुबतिनवि  
नलहेअभिसंधितावमान॥१३॥**पछत्रअभिसंधिता॥**  
वारवारकोलेजवकोत्पोनबुलातववालकज्योकोलिवे  
कोंकतविलताचहे॥ज्योज्योपरोपाइज्योत्पोयाहनतेपा  
नभयोहोतकहाअवकीनेमांघनसौमगाचहे॥केसो  
राससवछाडिकीनोहवहासोहेसुताहछाडिजियजि  
सेविनुमनांसेतवअसीतोहिप्रछिसजपीछंयछिताच  
हे॥१४॥**प्रकाशभिसंधिता॥**पापरेहतेप्रातमत्पोक  
हिकेसवकेपाहेनमेंडगरीनी॥तेरासखासिबसीधान  
एकउरोवहीकीसिबसीधिमेलीनी॥चरनचंदसरोज  
समीरवरेदुषरेहभईसबहीनी॥मेउलरीजुकरावि  
धिमोकदुन्यायनहीउलरीविधिकीनी॥१५॥**अथ**  
**वडिता॥**दोहा॥आवनकहिआवेनहीआवेप्रातम  
प्रात॥तासोंकहिसवडिताकहेरोषसौवात॥१६॥**प्र**  
**खंडिता॥**आविनजोसरुतनकांननतौसुनियत  
केसोराइजैसोंतमलोकमध्यगासहो॥वंसकोविसारी  
सुधिकाकज्योचुनतफिरोजुदेसादेसीथसठईठठठठ  
रहोहरिहरिकरतहीहोरिरीगहोपाजानौनकुठो  
रठोरजानिजियपाएहो॥काकोघरघालिवेकोंकहाव  
सेघनस्योमपूज्योघुसतप्रातमेरेघरअरआसहो  
॥१७॥**प्रकाशखंडिता॥**आजकछुआषियाहरिऔरे  
सामांतोमहाउरमाहरंगाहे॥मोहनमोहासालगतमोर  
हिइतैयरमोहनमोहिलगाहे॥मेरासोमोसडुमानडु  
वेगिहियेसरोसकीरतेजगीहे॥मेरेवियोगकेतेजित  
वाकिधोकेसवकाहूकेपेमयगीहे॥१८॥**अथप्रेषित**  
**प्रयसा॥**दोहा॥जाकोप्रातमेरेअवधिगयोकोनडुका  
ज॥ताकोप्रेषितप्रेयसीकरिवरनूतकविराज॥१९॥  
**पछत्रप्रातप्रयसा॥**केवेसाकेसेहंपूरवपुन्यभिलो  
मनभावतौभागभस्योरा॥जानेकोमाईकहाभयोरा  
हंजोअधिकोआधोकोसरोखोरा॥ताकहतनअजोह

राम  
२७



सिकोलेजउमेरोमोहनपायपायप्योरा॥काठहूवेहठ  
 तेरोकठोरतेविरहानलहैनजयोरा॥२०॥**प्रकाश**  
**वाचितप्रयसा॥**ओधिदेआसउहांउनसोंयहभोजन  
 केअवहाहमअहैं॥ताकहतौअवलौवहराईकेराधाव  
 रायमरुकरिमैंहैं॥वेढेकहारनकीठिगकेसवजाहुनहीं  
 काउजाइजुकेहैं॥जानतिहोउनअधिनतेअंसुवाउ  
 मेगेंपुनिकेसैंकैरेहैं॥२१॥**अथविप्रलधा॥**दोहा॥ह  
 तौसोंसंकेतवरिलैनपठाईआय॥लधाविप्रसुजानि  
 सेंअनआयेसताय॥२२॥**प्रथमविप्रल॥**सूलसेफू  
 लसुवासकुवाससीभाकसीसेभभोनसभागे॥केस  
 कवागमहावनसोजुरसीचढीजौनूसवेअंगरागे  
 नेहुलणोउरनाहरसोनिसनाहघरीकुकरेगशगे॥  
 गारिसेगातविरीविससीसगरेईसिंगारअंगारसेली  
 गे॥२३॥**प्रकाशविप्रलधा॥**रेषतउरुधिजानरेषिरेषि  
 निजगातचंपककेपातकछुलियाहेवनायके॥स  
 कलसंगंधठारिहृतिकाकौमारिपुनिफूलमालाते  
 रिउरिवीरीवगराईके॥लेलेरीहसासतजिविविधि  
 विलासआसकेसोरासकेउरासवलीअकुलाईके  
 सेईकेसंकेतसुनौकांनहसौकोलिउनौसोसौका  
 रिजोरहनौहनौदुषपाईके॥२४॥**अथभिसारिका॥**  
 हिततेकैमरमदनतेपियसोंमिलैजुजाइ॥सोकहि  
 जेअभिसारिकावरनौत्रिविधिवनाइ॥२५॥**सुकीया**  
**कौअभिसारु॥**दोहा॥अतिसलजपउगमगधरति  
 वंधवधुनिकेसंग॥सुयाकौअभिसारयहभूषनभूषि  
 तअग॥२६॥जनीसहेलीसोभिसबंधवधसंगवारु  
 मगमेंदेइवरपाइपगकुलराकौअभिसारु॥२७॥चकि  
 तविजसाहससहितनीलवसनजुतगात॥कुलरा  
 संध्याअभिसरेउसवतमअधरात॥२८॥वहूंकोरचि  
 तवेहसेचितचोरेसविलास॥अंगरागरंजितरनितभू  
 षनभूषितवास॥२९॥कुसुमकेदुकरमंदगतिमिंक

कि







नतछांहां चरसोअननकठिकहावलीसुभतिहेक  
 छुतोहिकनीहा॥३५॥केसवदाससुतानिविधिकही  
 सुकायानारि॥परकीयोहेभातिपुनिआठआठअ  
 नुहारि॥३६॥उन्नममधमअधमपुनितानितानि  
 विधिजानि॥प्रगदतीनिसेसाठितियकेसवदासव  
 षांति॥३७॥अथउन्नमनायकालछिन॥मानके  
 रेअपमानतेतजैमानतेमान॥पियरेषंसवउपजै  
 ताहिउन्नमाजानि॥३८॥होएकहाअवकेसमुमेंस  
 मुमेंनतवेजवहेसमजाये॥एकहीवंकविलोकनि  
 माहअनेकअमोलविवेकविकाये॥जानपनोनज  
 नावहुजजनमावधिलोउनिजानिहोपाये॥वाते  
 वनाइवनाइकहाकहोलेहुमनाइमानाइतोअये  
 ॥३९॥मध्यमानइका॥मानकरेलघुहोवतेछोडे  
 वहुतप्रनाम॥केसवदासवधानियेताहिमध्यमा  
 वाम॥४०॥भूलेहैसुधेनहीचितयोपिनकोहकी  
 येलचितालचकेतो॥हाहाकेहारिपरेपुनिकेसव  
 पाइपरेतेपरेरहेतो॥होतोयेहेतवहाकीविचार  
 तहोजगुमानकेयाहीतेएतो॥लावालेरेंअरुपा  
 तरारेहजोनेकवडाविधिअधिनिहेतो॥४१॥अ  
 धमा॥रूढेवारहिवारजोतूढेवेहीकाजताहीसोअ  
 धमासवेकहिवरनतविराज॥४२॥काहूंकपदजो  
 कान्हसोकीजेरावाढोवेवोसकुवालकसाई॥फा  
 रोसोपुंघरअोरअरेसोईहीदिखेरोअधकोजो  
 धसाई॥केसवअेसीसावीनकोमासोसिधेकेकोरित  
 कीजुहसाईकारहीवारकोरुसनोंवरुवहासावधिवियोगउ  
 वसाई॥४३॥इहविधिनारकनारकावरनिसहितविवेक  
 जातिकालवेभावतेकेसजानिअनेक॥४४॥तजितरुनी  
 संवेधकीजानिमिअहिजगज॥राधिलेइदुखईखतेता  
 कीतियसोभाज॥४५॥अवेकवरनअरुअंगघरिअंय  
 जननकीनारि॥तजिविधवाअरुपूजितारमियदुरसि  
 कविचारि॥४६॥इहसंभोगसिंगारकीकेसववरनीश

क

व



ति विप्रलम्भसिंघारकाशितिकहेकारिप्रति ॥ ४ ॥ **सिंघार**  
**प्रामनाहारजकुमार श्री इंदुजीत विरचितारसिक**  
**प्रायापीनवरसवनमंनोमसप्रमप्रभाव ॥ १ ॥**  
**विप्रलम्भसिंघारलछिन ॥ दोहा ॥** विकृतप्रियाजु  
 प्रीतमहिहोतजरसतिहिहोर ॥ विप्रलम्भसिंघारकाहे  
 वरनतकविसिरमोर ॥ १ ॥ **विप्रलम्भकमेद ॥** विप्रलम्भ  
 सिंघारकाचारि प्रकारप्रकास ॥ प्रथमप्रवीनुरागुपु  
 निकरुनामोनप्रवास ॥ १ ॥ **अथ प्रवीनुराग ॥** रेषतही  
 दुतिरेपतिहिउपजिपरतअनुराग ॥ विनरेषेदुषरेषि  
 ससोप्रवीनुराग ॥ ३ ॥ **श्रीराधाजकेप्रकृतप्रवीनुराग**  
**राग ॥** फूलनरिवाउसूलफूलतिहेहरिविनुहरिकरिमा  
 लवालवालसीलगतिहे ॥ चउरवलाउजिनविजनाहे  
 लाउलगेकेसवसुगंधवाउवायसीलगतिहे ॥ चरनचढा  
 उजिनतापसीचढतनकुंकुमनलाउअंगआगिसील ॥ २ ॥  
 गतिहे ॥ बारवारवरजतिवावरीहोवारीआनिवारीनषवा  
 उबारविससीलगतिहे ॥ ४ ॥ **श्रीराधाजकेप्रकासप्रवीनुराग**  
**नुराग ॥** केसवकेसैहंदिनराठिहैडाठियरेअतिईठक  
 न्हाई ॥ तारिनतेमनमेरेकौआनिभईसभईकहीवोहने  
 जाई ॥ होरनहासीजोआवेकहैकहिजानिहितअववु  
 मनआई ॥ केसौमिलेराभिलेविनकेपारहनेननिहे  
 तहियेउरमाई ॥ ५ ॥ **श्रीकामजकेप्रकृतप्रवीनुराग**  
**राग ॥** एकसमेहषभानसतासजनागनेमंजननीसंगेवैसी  
 जातिउहैचितयोतिहिरातिसुप्रतिहियेकहिजारन  
 तेसी ॥ तारिनतेजगकीजुवतीनकीलागतिकेसवभा  
 तिअनैसी ॥ बाहिकल्याचितचक्रवडनकहेदुतिरे  
 धियेवासुषकेसी ॥ ६ ॥ **श्रीकामजकेप्रकासप्रवीनुराग**  
**राग ॥** भातिभलीषभानललाजवतेअंधियाअंधी  
 यानिसौजोरा ॥ भोहचढाकछुउरवारबुलारलजि  
 यजानिकेभोर ॥ केसवकाह्योतारिनतेरुचिके  
 नविलोकनिकेतौनिहोरी ॥ लालतिहेसवहीकेसि  
 गारअंगारनिजोचितचरकोरी ॥ ७ ॥ **दोहा ॥** अवलो



कनिष्ठा लापते मिलिबेकों अकुलाश ॥ होतर शारस  
 विनमिले के सब कों हिजा ॥ ८ ॥ अथर शारस ॥  
 अभिलाष सचिंता गुन कथन स्मृति उहे गप लाप  
 उन्माद व्याधि जउता भय होत मरन पुनि आष ॥ ९ ॥  
 ॥ अभिलाष लछिन ॥ नैन नैन मन मिलि रहे चोहे  
 मिल्यो सरी ॥ कह के सब अभिलाष यह वरन तेहे क  
 विधी ॥ १० ॥ आराधी जे को प्रकुन अभिलाष ॥ सुधि  
 बुधि घरी दुति रेह मिरी दिन ही दिन चाहति वाढति  
 सी ॥ कछु के सब आष ने पर की पीर दुरावति ये सुष का  
 ठति सी ॥ विसयो सष भूष सखी निस नीर परी चि  
 त चाहति आठति सी ॥ गयो कछु गांठि ते छुरि छुवा  
 ला सका हे ते डोलत डाठति सी ॥ ११ ॥ आराधी जे को  
 प्रकास अभिलाष ॥ जौ कहें देखे लगे रिष साध रिषा  
 वेन ही दिन ही दुष ये हो ॥ याही मे के सब देखि ये वाल  
 न देखि देखि सषी अव के हो ॥ यो उन को दुरि देखि हो  
 रेहु ज्यो आष नो रेहु न देख न रेहु ॥ देखिबे को बहराव  
 त मोहि सों व कह कछु देखि दुले हो ॥ १२ ॥ आरुम  
 को प्रकुन अभिलाष ॥ पाप रो वलि जाउ मनो हर आ  
 पन सी न करो अवता ॥ देखे आघात न ही दिन के फि  
 रवार कधी अन देखे ही जा ॥ मासों कही सकही अव  
 के सब के सेह को नृप त्याहु जका ॥ उठ दुगे जुग हे  
 विनु धार जता तो हे नै क सिरा न वाह ॥ १३ ॥ के सब  
 मेन सौ नैन निलागे ही भूरु ह प्रेम अरिष्ट वटावे ॥ वे  
 वह काम लजा अवलं वे सतो मन मूठ उपाय न दोवे ॥  
 की जे कृपा है धिरा जे बुधा सयो राधिका के उर में उप हों  
 जा आवे ॥ लागति ज्यो क वहं सहवार क त्या सुदु सो सु  
 दु आनि लगवे ॥ १४ ॥ आरुम जे को वाकास अभिलाष  
 ॥ हे को उमा रित न की यह जा कहे कि हार रहे है  
 या ही के सब गो कुल की कुल लकुल नारिन नाउल  
 हैं ॥ देखि देखि लगार रगा न सौ नै सेना कवा हिर हे  
 ॥ को हेर को नै से जानति नाहिन काहि ही का के संदे



सकहे हैं ॥ १५ ॥ **अथ चिंता** ॥ कैसे कैसे मिलि मिले हरि के  
 से वसि हो ॥ रह चिंता चित रहित के वर न तहे सब को ॥  
 ॥ १६ ॥ **श्री राधाजी की प्रह्लाद चिंता** ॥ आपन जु सेतन  
 आपनो होत न रेखे जाहि ॥ आपन ही ते आपनो को म  
 न करि हेताहि ॥ १७ ॥ **श्री राधाजी की प्रकाश चिंता** ॥ प्रे  
 म भय भूषण रूप सचिव संको व सोच विरह विनो र पील  
 पेलियत पाविकें ॥ तरल तरंग अवलोकनि अनंग  
 तिरछ मनोर धर हे पै रागु नै गविकें ॥ दुहं डुर य सो जो  
 र धोर घनो के सो रास हो ॥ जीति को न की को हो रे हि  
 यह चिकें ॥ रेषत तहे गुणाल तिहिकाल उहिवाल  
 उर सतरज की सीवा जी राधार चिकें ॥ १८ ॥ **श्री कृष्ण**  
**की प्रह्लाद चिंता** ॥ के सो रास सकल सुवास को नि  
 वासत न कहिक व भ्रकुरी विलास ज्ञास छो सिहें  
 के सो हे सुदिन वडु भागी अनुरागी जिह मेरे इग वा के  
 संग लागी लागी डोलिहें ॥ ऐसी हैं है स पुनि अये न  
 करा छु मर मर पन सार सम मेरे उर आलिहें ॥ दीप  
 के समीप नि सिरी पति विलो के वह चित्र की सीप  
 तरी सब को हंसि वो लिहें ॥ १९ ॥ **श्री कृष्ण की प्रका**  
**स चिंता** ॥ राधिका की जननी ही के कानन को ऊस  
 ये वर वात चलो वें ॥ देव कुमार से गोप कुमार निमान  
 रें रें लष भान बुलावें ॥ के सब कैसे हंवा लभ ली वह  
 मालस मेरे ही ये पहरा के ॥ तोहि सखी समरे संगता  
 के सब को यह वात सबे वनि आवे ॥ २० ॥ **अथ गुन**  
**कथन** ॥ **रिहा** ॥ जिह गुन गन गनि रे ह दुति वर न त  
 वचन विसेष ॥ ता के जानु गुन कथन मन मय म  
 च सुलेख ॥ २१ ॥ **श्री राधिका की प्रह्लाद गुन** ॥ कीरति  
 सहित नित के सब कु वर कां न केवल अ कीरति नृपति  
 सो म मानियें ॥ छवत चंपक पात कु म्हिला त जात गा  
 त अति हरषित ते न हरि जू को जानियें ॥ कोमल सुवा  
 दू जूत प्यारे के परम पानि के रंक कलित नाल न लिन राम  
 वषा नियें ॥ लोचन विसाल चारु मदन गुणाल जू के म



दनसर निरसनरसहानिये ॥ १२ ॥ **आराधिका प्रका**  
**सगुन कथन ॥** धन नहे मन रंजन के सवरंजन नैन  
 किधों मति जा की ॥ माठा सधी कि सचाधर की दुति रंज  
 न की किधों राडिम ही की ॥ चंद भलो मुख चंद किधों स  
 धिसूर तिका म कि का नू की ना की ॥ कोमल यंक ज के  
 पर पंक ज प्रान पियोर की मूर तियी की ॥ १३ ॥ **आराधिका**  
**का प्रथम गुन कथन ॥** जो कहें के सव सोम सरो ज स  
 धा सर भंग निरे हर हे हैं ॥ राडिम के फल श्री फल विदुम  
 हार क कोरि क क ह स हे हैं ॥ कोक क पोत करी अहिके ह  
 रि को किल की र कुची ल क हे हैं ॥ अंग अ नूप म वा निय  
 के उन की उपमा कहि वे र हे हैं ॥ १४ ॥ **आराधिका**  
**प्रका सगुन कथन ॥** लोचन वी विचु भी रुचिर भे की के  
 सव के सें दु जात न काठी ॥ मान हु मे रे ग ही अनुराग हि  
 कुं कु म पंक सौ अ कित गाठी ॥ मेरी यल गिर ही तनु ता  
 जु तज्यो दु ति नी ल नि चो ल में वाठी ॥ मेरे हि मा सु ही स  
 क दु संधत यो अर विंदरी ये सुष ठाठी ॥ १५ ॥ **अथ स**  
**ति ॥** और कछु न सहाय ज हो भूलि जात सव का म  
 मन मिलि वे की काम ना ता हि सृति हे नां म ॥ १६ ॥ **आ**  
**राधिका प्रका सगुन कथन ॥** को ल्यो सहा न धे ल्यो ह ल्यो  
 अरे ल्यो सहा न दुष व द्यो सो ॥ ना की ये वा त सु ने स  
 सु ने न मु नों मन का हू के मो ह म द्यो सो ॥ के स व दू ट ति  
 यो उर में म ति मूढ भये गुन गूढ प द्यो सो ॥ को करे सा ज  
 व जा वे को वी न हिया को कछु चित चा क च द्यो सो ॥ १७ ॥  
**आराधिका प्रका सगुन कथन ॥** मेरे मिला सें हा पै मि  
 लि हो मन मोहन सौ मनु मो हिनरी जे ॥ मो न हि मो न  
 व नैन कछु अव को मन आन रे के र स भी जे ॥ अ से ही  
 के स व के सौ जियोगी हो या न न षा दु तो या नी न यी जे  
 जानि हे को उ क हा करि हो त व सो च न जो तो स को च न  
 की जे ॥ १८ ॥ **आराधिका प्रका सगुन कथन ॥** धोरि य नो  
 घन सार सें घन स्या म स चंद न छे त न ह ल्यो ॥ के स व



कुंजको कुलचिते प्रतिकूलमसुभकूलनिफूलेन भू  
 लेसे डोलत बोलत हंउत जात किंते मनसं धमभूल्या  
 जानतिहो यह काहू के आ ज मनोहर हारहि डोर निरू  
 ल्या ॥ २९ ॥ श्रीकृष्णजीकी प्रकास सति ॥ आसनवा  
 सभये विसके सवडासनडासनि की गतिलीने ॥ चंद  
 नचोरिनी त्यों चितचोहेन चंडिका चंदचितैरसभी २९  
 ने ॥ पीननवातन पांन करै कछु हासविलासविराक  
 रिहीने ॥ ऐसीहं गोकुलके कुलकी जिनि गोकुलना  
 यके सठंगकीने ॥ ३० ॥ अथ उहेगा ॥ दुषरायक हे जा  
 ततं जहां सषरायक अनपास ॥ सो उहेगा रसादुसह जान  
 दुके सवरस ॥ ३१ ॥ श्रीराधीजीकी प्रकृत उहेगा ॥ चंदनही  
 विषकं हेके सवरहय ही गुनलीतिनलीनो ॥ कुंभजया  
 उन जानि अणउन भोरै पायो पवि जानन हीनो ॥ यासो  
 सधाधरसेष विषधरनां उधयो विधिहे बुधिहीनो ॥ स्म  
 रसो मीरै कहा कहिय यह पापी जू आयवरवरिकीनो  
 ॥ ३२ ॥ श्रीराधीजीकी प्रकास उहेगा ॥ केसवकाल्हि वि  
 लोकि भजी उह आ जिविलोके विनां सुमरे जू वासरवी  
 सविसे विसमीडिये राति जन्हार की जोति जरे जू पालि  
 केतै भूवभूमिते पालिक आति करारिक लालि करै जू  
 भूषनरेडुकछु जभूषन हूषनरेहू को हेरि हेरै जू ॥ ३३ ॥  
 ॥ श्रीकृष्णजीकी प्रकृत उहेगा ॥ मेघनि ज्यो हसिहंसनि  
 हेरतिहंसनि ज्यो घनरूपनयो वै ॥ केजनि ज्यो चितचंदन  
 वाहत चंदज्यो केजनि के पाहुन छी वै ॥ तालतै वागनि वाग  
 तै तालनि तालत मालकी जातन सी वै ॥ केसीहं केसवै जू  
 वती सनि ऐसी रसापिय की यलजी वै ॥ ३४ ॥ श्रीकृष्णजी  
 का प्रकास उहेगा ॥ सो विसखा भरिले तविलोचन को पत  
 रेषत फूलेत मालहि ॥ भूलेसे डोलत बोलत नाहिन वागग  
 राकिधौ तेरे ही तालहि ॥ ऐयाजु वाहति रेषन आवति ससे  
 मं हो नरिषा उरी तालहि ॥ आज कहा रेषि साधलगी जवरे  
 व्यासहार कछु न गुपालहि ॥ ३५ ॥ अथ प्रलाप ॥ भवतर



हे मनभरज्यो है तनमनपरिताप। वचनकहे पियपछे  
तासो कहत प्रलाप॥ ३६॥ श्रीराधा जका प्रह्व प्रलाप॥  
बेलनह सीनघोरि अठाउनहेतनवेरही येकपटोसो॥ लो  
नोनहेनो हिलाउभलाउननो तोनगोतोकहाकहो तोसो  
आनिरयोसुषमंदुषकेसबकेसेहसो रिकहाकहिकोसो  
नि नैननारभरेकहेवालिरीदेव्योतैकाहकहाकहामोसो  
॥ ३७॥ श्रीराधा जका प्रकास प्रलाप॥ अलीनिकेसांमि  
लाहुताबेलतजोनेकोकांनहोआसकहांते॥ डीठिहाडी  
ठियसोनकछूसठिठिगहीहठियाठिकीघांते॥ गइग  
डिजाजनिहीहियहो तोउठीजरिकेसबकापनीयांते॥ इती  
रिसहोनववीकवहंसरहीवचियेअधियानकेनीते॥ ३८॥  
श्रीकमजका प्रह्व प्रलाप॥ नीलनिबोलदुराकपोल  
बिलोकतहीकीयोबोलिकेतोही॥ जानिपरसिवो  
लतभीतरिभागिगईअवलोकतमोही॥ ब्रह्मिवेकीजक  
लागीहैकांनहिकेसबकेरुचिरूपजिजोहो॥ गोरसकीसो  
बवाकीसो तोहिकिवारलगीकहिमेरीसोकोही॥ ३९॥ श्री  
कमजका प्रकास प्रलाप॥ मोहनीमरीचिकासोहासध  
नसारकोसोवाससुषरूपकीसीरेषाअवहातहै॥ केसोरा  
सबेनीतोत्रिवेनासीवनागुहाजामेमेरेमनोरथसुनि  
सेअनहातहै॥ नेहउरुसेनेनरेधिवेकोविजेसेरिऊकीके  
सीभोहैउरुकेसेउरजातहै॥ रेवासीवनाईविधिऊन  
कीहैजाईवहतेरेघरआइआजुकहिकेसीवातहै॥ ४०॥  
अथउन्मार॥ राह॥ तरकिउठैपुनिउठिवेलेचितैरहे  
सुद्धरेधि॥ सोउन्मारजुगावईरोवेहसेविसेधि॥ ४१॥ श्री  
राधा जका प्रह्व उन्मार॥ केसबचोकतसीचितवेछा  
नियोधरकेतरकेतकिछोही॥ ब्रह्मिअओरकहेसुद्धओरई  
ओरकीओरभईपलसांही॥ डीठिलगीकिधोवाइलगीम  
नभूलियसोकि कसोकछकोही॥ घूघरकीघरकीपर  
कीहरिआजकछूसधिराधेकोनांही॥ ४२॥ श्रीराधा ज  
का प्रकास उन्मार॥ केसबसुद्धिसिद्धहरितमविनु  
विद्याअगाधराधिकहिवाही॥ छूरीतरतरकनिकरितर



लंकितवतिनीदिडादिकरिदादा ॥ तारकतितकितोरति  
 तनुतलफतिअतिअपारउपवारनिडादा ॥ सकसका  
 तिलेलेसासअवेतसवेतदुषमपेतगहागहा ॥ ४३ ॥  
 ॥ श्रीकृष्णजीकोप्रकाशउत्तार ॥ गुरुअगुरुप्रकासि  
 तवातनिलोकअलोककीवातसरीसी ॥ रोवतहेकव  
 दूहसिगावतनावतलाजकीछुडिछुरासी ॥ काहूको  
 सोचसंकोचनकेसवरेषतिआवतरेहमरीसी ॥ वाम  
 किवाशिकीकामकिप्रेमकिहेहरिकीमनिकाहूहरीसी  
 ॥ ४४ ॥ श्रीकृष्णजीकोप्रकाशउत्तार ॥ सलजव  
 कितवितवतचितचहंरिसचाहिवाहिरहेमुषवपल  
 चलतधार ॥ सोचतसेमनमनकीपततपततनकेसो  
 राशोवतहसतवेढेगाशगाश ॥ चलहिरिषाउतोहिरेशत  
 हीभयमाहिभयोसोकहनआईतोसोअलिअकुलाइ  
 जेमेंकछुआकवाकवकतहेआजहरितेंसेजिनिनाउ  
 सुदुकाहूकोनिकसिजा ॥ ४५ ॥ अथवाधिलिखन ॥  
 अगवरनविवरनजहांअतिउवेउत्तास ॥ नैननारण  
 रितापवदुव्याधिसकेसवरास ॥ ४६ ॥ श्रीगणेशजीकी  
 भि ॥ वैनुतज्योउनिवीनतेंवोलेंनवेनविलोकेंतुहि  
 भगाहे ॥ वेनसुनैसुमुनेनत्वातहिपेतलज्योकिधोश्री  
 तिजगाहे ॥ केसववैतोहितोहिरैदेरतौहिरैतेउनही  
 कीलगीहे ॥ वैभषेपानैपानीनत्सतेंकान्हठगेकित  
 कोन्हिठगीहे ॥ ४७ ॥ श्रीकृष्णजीकीवाधि ॥ हूंउनकेतन  
 तापनतापिरुघांनकेअसंनिअहेर ॥ हूंउनकेउडिजे  
 उसासनिघांनकेउपवारजुडेरा ॥ केसवैवेनरलालनुस  
 हवभानललापेनिहाननपेरा ॥ एकहिवेरदुहंनिकहाभ  
 योमाईरीतचलिरेषिउरेरा ॥ ४८ ॥ अथजडता ॥ भूलि  
 जाइसधिवुधिजहादुषसुषहोरसमान ॥ तासोजडताक  
 हतहे ॥ केसवराससुजान ॥ ४९ ॥ श्रीगणेशजीकी  
 नजडता ॥ वेरेउपवारषरीसीयरसियरेतेंपरिषरेतन  
 छीजे ॥ ऐसेमेंअरकीयेतेंकछुउपजेतौसकेलिकहा  
 हमलीजे ॥ देवतहीयहकामकलीकुन्हिलीनीयेजा



कहा श्रव कीजे। कौन ये जाउ कहा करे के सब के सें जिये  
 यह क्यों हम जीजे ॥ ५० ॥ **आराधन की प्रकाश जडता**  
 ॥ अंधियानि मिली साधियानि मिली पतियावतियां नि  
 मिली तजि सौने ॥ ध्यान विधान मिली मन ही मन जेयानि  
 लेरं कमनौ मन सौने ॥ के सब के सें हू विगि मिली तन है  
 है उहे हरि जो कछु होने ॥ **हरन प्रेम समाधि मिले मिलि**  
 जै है तुम मिलि होत व कोने ॥ ५१ ॥ **आराधन की प्रकाश**  
**जडता ॥** पल ही पल सीतल होत सर विचारि सवै उ  
 पचार निरने ॥ जो करि सत न मंडन वंडन चित्र कछु  
 बसबन ग्राने ॥ के सब का न्ह सने स सुने नहि ब्रह्म को  
 नहि कोइ हमाने ॥ **जोग लियो कि वियोग है काहू को लोग**  
 कहा न रोग निजाने ॥ ५२ ॥ **आराधन की प्रकाश जडता**  
 ॥ कौन के आसन वासन ही नहु तासन मीत कौ आसन  
 कीजे ॥ के सब इंद्रिय सोधि सवै मन साधिसमाधिन केरस  
 भाजे ॥ जौ लोभ हरि सिद्ध प्रसिद्ध न तो लो वि लोकि अ  
 लोक न लीजे ॥ देविकरे तप तो ल गिवे वर रोनन जौ जिय  
 राने तेहीजे ॥ ५३ ॥ **अथ मरन वर्नन ॥ दोहा ॥** वने न  
 कोह मिलन जहा छल वल के सब दास ॥ **हरन प्रेम प्रताप**  
 ते मरन होइ अनयास ॥ ५४ ॥ **मरन के सब दास वै वरना**  
 जारन मित्र ॥ **अथ मरन वर्नन ॥** कहि कहि के सें प्रेम वरि ॥  
 ५५ ॥ **रति उपजे रमनी के पहिले के सब दास ॥ तिन को**  
 ॥ **अंगित दोष सधिकरत सुप्रेम प्रकाश ॥ ५६ ॥ अति आदर अ**  
 तिलो भते अति संगति ते मित्र ॥ साध निहू के होत है के सब  
 वचन चित्र ॥ ५७ ॥ **सुभग दसाइ सें कही उपजी हरन राग**  
 जिह विधि उपजे मान मन वरनौ सुनहु सुभाग ॥ ५८ ॥ **रति**  
**आमन महाराज कुमार श्री इंद्र जात विरविता की रति**  
**क प्रिया की विषले भृंगार प्रवीनु राग वने नो नास अ**  
**पमः प्रभावः ॥ ५९ ॥ अथ मान वर्नन ॥ दोहा ॥** हरन प्रेम  
 प्रताप ते उपजते है अभिमान ॥ ताकी छविके छो भसों के स  
 व कहियत मान ॥ ६० ॥ **अथ मान वर्नन ॥** प्रगटहि पिय प्रतिमान







इहों न के अली॥ कालि के तो मो सों घालि न रत्ना लला  
लि करे कालि ही न आइ॥ वालि जौ पे तहत भली॥ आ  
जही जो वाचपरी वाचपारि वै॥ वै माई आनं रंग आन  
जिय जे पां के नर की ली॥ तेरे ही कह की को सु साधि है ज  
वृत्ति सरीरे सज आधिसाधि वृत्ति के की काचली॥  
॥१०॥ श्री राधा नृका प्रकास लघुमान॥ कान्होति हारी  
वाशेन प्रिया के सयां न अयां न सवे मन मांही॥ मान कि  
धौ अय मान अवे यह मान सवे अनुमानि न जांही॥ सुष  
दुषन के सव जानि पेरै स मुं मेरि सहां सी नहां अरु नांही  
यो छिन में सिय र छिन ताती है जे वर ले वर लानि की  
छांही॥ ॥११॥ श्री राधा नृका प्रकास लघुमान॥ पिये को क  
हो करे न जहा प्रिया को नही लाज॥ उपज ते हे लघुमा  
न तहां वर नि कहै क विराज॥ ॥१२॥ आगे कहा कार हो अ  
वही तो रौती दुषरी नोक हो विनु की नें॥ के सव को न  
हुलाज कि लाउते भूलि गई तो भई हित ही नें॥ भेर न ही भ  
रि अंकल लाभ रिजी मन वो ले जु वोलन वी नें॥ देखे न  
ही क वहु भरि ने न नि आ जु हिं के संच ले वितुली नें॥  
॥१३॥ श्री राधा नृका प्रकास लघुमान॥ बोलि जे आस तो वो  
लत नां हि न मो ते कह क छु र कति हारी॥ के सव के सें ह  
रे वै सने विनु जाने कहा को कुजी का पि हारी॥ धीरि सिर  
एन जानत वा इय ह भूष की राति नि हारी॥ का बिहि रा  
षहि बां हत बायो स अंत त कुत म कुं ज विहीरी॥ ॥१४॥  
श्री राधा नृका प्रकास लघुमान॥ दोहा॥ वात कहत विय  
आर सों देखे के सव रास॥ उपजत मध्यम मान तहां मान  
निके स विलास॥ ॥१५॥ कहै कान्ह कहां सि गरी निसि ना सी  
स तो त म ही कह बां ह तिही॥ तनु में त नुरे वलिषी कि  
हि के सव कं र क कान न गाहत ही॥ क कु रा ती सी अंधि  
कहां भई ता ता ति हारे वियोग के राहत ही॥ हिय वं व  
कराति र वीज वरं च कला इ ल ई नुर नाहत ही॥ ॥१६॥  
श्री राधा नृका प्रकास लघुमान॥ सखी जे उन को सुव का



१४ ति मोह न्यां आर्य कावन के गरि **अव पा ही ते तो स दुवा**  
 तक छ कहि वेडु की तो न कह पर **कहि के सव आ प**  
 निजां घउ घारि के आ प ही लाज नि को मर **इ को तो स**  
 व ते हर सह रि है अव हो हं क हा हरि ते हर **१७ ॥ क म**  
**को प छ म म म मान ॥** जहां न मोने मानि ना हो रे पी उ  
 म ना **उ प ज त म म म मान त हो पी त म के उ र आ १८ ॥**  
 वार वार वर जा मे सार स सर स मुषी आर सी लै रे वि सु ध पा  
 र स मे वोरि है **सौ भा के नि हो रे ते नि हार ति न ने क हं ते**  
 हारी है नि हो रि स व क हा का हू धोरि है **सुष को नि हो रोज**  
 न मान्यो सुभली करि ते के सो रा की सो अव जो तु मन  
 मारि है **ना ह के नि हो रे कि न मान हि नि हो र ति हो ने ह के**  
 नि हो रे कि रि मो हां जु नि हो रि है **१९ ॥ श्री क म न का**  
**प का स म म म मान ॥** मान हि मान ते न्यां मानि नि के  
 स व मान स ते क छ मान रे गो **मान रे हे सु जु मानो न ही**  
 परि मानु ते धे अभि मान भरे गो **कै हो स हे ली स मान ते वे**  
 ज व सो ति न मे अ य मान करे गो **आ प म ना व तु मान हि**  
 रा व हो जु म ना व न तो हि य रे गो **२० ॥ सो हा ॥ रा ध रा धा**  
 र मन के वर ने मान स मान **ति न को मान म ना शो क**  
 हि प त स न दु स जान **२१ ॥ द ति क म म म हा ग न कु न**  
**रं दु जी त धि र वि ता पां र सि क धि या यां वि पु ल म म**  
**गार वि र ह व न न ना म न व मः अ भा व म ॥ २२ ॥ अ य मान**  
**नो व न ॥** मान त ज हि धि य त म धि या क हि के स व करि पी  
 ति **वर नि स ना उं स न दु स व जे मे सु नी ष री ति ॥ २३ ॥ सा**  
 म रा न भ नि भे द पु नि प्र न ति उ पे क्षा मा नि **अ ह प सं ग वि**  
 धं स सु नि रं ड हो र स हा नि **२४ ॥ साम ल ॥ नै ॥ हो हा ॥**  
 जो को ह म न मो हि ये छु रि जा **जि हि मा तु सो री साम उ पा**  
 उ क हि के स व रा स व वा तु **२५ ॥ श्री रा धि का को मा न उ पा**  
**प क वि त ॥** के स व रा स स रा कि ये आ स रे हे सु ष की दु ष ता  
 हि न री जै **ता हूं सो रो सु न मानि ये मानि नि भू ति हूं आ**  
 नो मानि जु ली जै **हो त म ही तु म हो सु नि सं र रि मूर**



तिहा जय कहि जीजे मान हे भेद को मूल महा अने स  
हुं ले पने हुन की जी ॥ ४ ॥ श्री कर्म को साम उपाय ॥  
कहि आवति हे नुकहावत होत मनहि तो ता कित  
कै हस सो हो ॥ तिहि पे डे क हाव लिपे क वहु जिहि का  
हो लेगे पग धीरु घो हो ॥ प्रीति कुं म्हे डे की जे हे जई स  
म होत तू म्हे अंगु री य स रो हो ॥ की जे कछु यह जानि  
कै के सव होत म होत म हो हरि हो ही ॥ ५ ॥ अथ दान  
लछन ॥ ६ ॥ के सव को न हूं व्याज क छु रे लछु डो वे  
मातु ॥ वचन रचन मो हे मन हि तो सो कहिये दान ॥  
जही लोभ ने दान लै छो डे मानि नि मातु ॥ वार वध के  
लछन हि पावेत ही प्रमान ॥ ७ ॥ श्री राधिका का दान  
उपाय ॥ को म ल अ म ल र ल ही ने हे क म ल भ व अ रु न मान  
व स न प्र भु जू को सु ध रा ये ॥ के सो रा स सो भा ध र स  
ध र सु धा के ध र म ध र अ ध र उ य मा तो र न पा र ये ॥ उ र ज  
म ल य से ल सी ल स म सु नि रे धि अ ल क व लि त व्या ल  
आ सा उ र आ र ये ॥ नि प र नि गंध य डु हार जी व वं ध को  
सो चा ह त स गंध भ यो ने क ग्रा व नार ये ॥ ८ ॥ कवि ॥  
म न्न ग य र नि सा घ स दार हि धा व र जं ग म जं त्र वि द्या स्यो  
तारि न वे क हि के स व वे ध नि वं ध न के त डु धा वि धि मा  
स्यो ॥ सो अ य रा ध स धा र न सो धि हि ये र हि सा ध नु सा ध चि  
चा स्यो ॥ पा व न पुं ज ति हो रे हि ये अ व चा ह ति हे य ह हा स र  
वि हा स्यो ॥ ९ ॥ कर्म का र न उपाय ॥ ह स त ह स त आ  
दि आ नि र क गा धा गार् क हो धों क न्हा र्पा को भा व स  
सु मार के ॥ पी वे के अ ध र म ध र प ति र क ही चार र द न  
कर ज घ ल ही जै व ता र के ॥ प डु प रि रं भ न क हो वे को न  
के सो रा र मे री सों जे मो सो त म रा ष डु द रा र के ॥ रा धि का  
की अ धि का र क हा क हो ली नों आ तु आप नो पि पा रो  
पि उ आ पु हो म ना र के ॥ १० ॥ अथ भेद लछन ॥ दो हा ॥  
सु ध रै के स व स धि नि को आ पु ले डु अ प ना र ॥ त व जू  
कु डो वे मा न कुं व र नों भे र व ना र ॥ ११ ॥ श्री राधिका का  
उपाय ॥ के स व धा र व चा सि नि तो हि स धी  
कुं च स व आ ग नि यो ते मो हि तो मारि क हें ही व ने अ



ववां धिर्दधितो कहिताते ॥ नेक हरे हरे वोलिबला  
 रत्नो होउ योंग डिजा न जाते ॥ मंथन सो मेरे मोहन  
 को मन का ठसी तेरी कटे ठी सवाते ॥ ११ ॥ **श्री कृष्ण**  
**काम रत्न** ॥ काहुं कछो हरि रुठि रहै तव ते वहु सु  
 धिचित के वढावे ॥ सो धि सवे अयनो सोरही धन मी  
 तरहे सो उपाउ न पावे ॥ उहां बहरीति ॥ हां यह के स  
 व ज्यो दुहु अरजुरे को जुरावे ॥ पूछनि हो पिय प्या  
 रीति हारि समानु करै कि मनाव न आवे ॥ १२ ॥ **अथ**  
**प्रनति लक्षण** ॥ **दोहा** ॥ अति हित ते अतिकाम ते अ  
 ति अपराध ते जानु ॥ पार पेरि पीत म प्रिया ता सो प्रन  
 ति वधानु ॥ १३ ॥ **श्री राधिका की प्रनति हित ते** ॥  
 हित ते चित यो जुन स्खेंत जु जउ प्रेम के के पिय पाउंग  
 सा हो ॥ मी हि विलोकि विलोकि अलीनि अली क अ  
 लोक प्रवाह वयो हो ॥ पूछनि हो सवि सा सखियें ति  
 नु अर सवे हिय हेतुर हो ॥ कान्हू हिं अय मनान वनि  
 तो सो मे मानु किधों अर मानु क हो ॥ १४ ॥ **श्री रा**  
**धिका का प्रनति अति काम रूप रचित** ॥ **कवि नु** ॥ न  
 कोल ति अगु को लाये डुवाल कहा लग मोहि व का ये ही  
 मारन ॥ सो प सो पाई सुख सखी सवरे ति है ज्यो जुवती  
 जिहिकारन ॥ हठ छाडि को के ठउ वार लग उ कहल  
 गिरे विश का सनि हारन ॥ कोन भरि न दे न सतो  
 त्र हिल गी क छुल दु पारन ॥ १५ ॥ **श्री राधिका की प्र**  
**नति अपराध ते** ॥ **कवि नु** ॥ के सवरा सउदास भ  
 रिर सा र सा दुष दो सभ सोरी ॥ राति भये अधराति  
 कहं ले विने वहु बंधु बंधु निक सोरी ॥ धार ही स मुजा  
 इक छुन सखी निहुं के सिधियें ते स सोरी ॥ का हो ते मा  
 न्यो न मानि नि मानु सु पार नि जौल गिना दुं य सोरी  
 ॥ १६ ॥ **दोहा** ॥ पिय हि मनो वे पांशु पारि प्रिया पर महि त मा  
 नि न अपराधन काम ते यरत त हार सहानि ॥ १७ ॥ **श्री**  
**कृष्ण का प्रनति** ॥ **कवि नु** ॥ नीर हितो चिनु मीन सै  
 परि मान कोरी ॥ नीर हिके जिय जी ॥ जाचि नु अर स



हारन के सवताहि सहा रस तो सव की जै ॥ जौ लग मोप  
गला मति हे सलगी पग अंकल गारन ली जै ॥ हो सि  
ष ऊ अ पने सपने दु तो आवत लछि कि वारन ही जै  
॥ १८ ॥ अथ उपमा लछन ॥ दोहा ॥ मान मुचावत वा  
त तजि कहिये और संग छूरि जा रजि हि मान सो  
कहत उये छा अंग ॥ १९ ॥ श्री राधाजू की उये ज ॥  
॥ किति नु ॥ चपलान चमकति चमकह्यारि निने  
की बोलत न व मोर वंदी सपन स माज के ॥ जहां तहां  
गाजत न वाजत र मा में ही हरेत न रिषा रिन म निली  
ने लाज के ॥ बलि बलि वंद मुखी सां वरे स घो पे वी गि सो  
कत जिके सो रा स अरि सुष साज के ॥ बढी बढी पवन तु र  
गनि गगन घन वाहत फिरत वंद जो धात मराज के ॥ २० ॥  
श्री कृष्ण की उये छा कवि ॥ के सो रा स रिन गति के  
तु की की भावे भांति जिय में वसति जाति ने न नि में न लि  
नी साधवी कोण जै मधु सूत न अंध क ह से वती सपने  
कहे से रंग ध फलिनी ॥ और हों क हत वात का न्ह का हे  
को ल जात से से तो धि स्या सो जो हो र मन म लीनी ॥ रे  
बोन ही शन पति निल ज अली की गति माल ती सी मि  
लो वा हे लिये साध अलिनी ॥ २१ ॥ अथ प्रसंग विधु ल  
हा ॥ उपजि परे भव चित्र भ्रम लै भूलि जा रजि हि मान  
सो प्रसंग विधु सकविके सवदा सवधान ॥ २२ ॥ श्री रा  
जू की प्रसंग विधु ल ॥ कवि ॥ के किन के सव काम  
के किं कर बोलत जौ लत देत दो हा ॥ कामि निसा र हिका  
मिनि को छूरि सा र गीता क ह हूँ हो रिसा ॥ गाजत ना हिन  
मेघ पतों के हूँ हो रिसा ॥ र प ह वाजत डों डी सखी सुष  
दा ॥ भो भ भये फिर की वो अ तो लो हा वोलों अ वे वलि वो  
ले क ह ॥ २३ ॥ श्री कृष्ण की प्रसंग विधु ल ॥ को की न  
की कारिका कहत सक सारिका सो हरि हरि हितु चित  
वो गुनो वढा यो हे ॥ खिर ही सकुच नि वा पुरी सकी तो  
क हिका ह सो स के न रे ह दुप नि उढा यो हे ॥ उ वि च लो न्या च  
की जै अ व के म ना री जै नी के ही में के सो रा सकल दु वढा यो



हे मानननतेपरउलरामनोवैचहसेसोईसयानुस्यम  
 सकहियठयोहे ॥२४॥ रोहा ॥ रेसकालडुधिवचनके  
 लकनिकेमलगान ॥ सोभासभसोंगंधतेसुषहीछूरत  
 मान ॥२५॥ कवि ॥ घननिकापोरसनिमोरनिकोसो  
 रसनिंनिकेसवअलापआलीजनको ॥ रामिनीरम  
 करेपिरीपकीरीपनिरेबिरेबिसभसेजरेधिसरनसव  
 नको ॥ कुंकुमकीवासघनसारकीसवासभयोफूलन  
 कीवासमनफूलिकेमिलतको ॥ हसिहसिवोलेदोअ  
 नहीमनासमानुछूरिगोसकहीवारराधिकारमनको ॥  
 ॥२६॥ रोहा ॥ इहिविधमानुछूटावहीआपुसमेंनरनारि  
 पलपलशीतिवठावहीकेसचेदरासविचारि ॥२७॥ प्रीया  
 नशीतमसोंकोअतिहृकेसोरास ॥ वहरोहाअनआवई  
 जौहैजाउरास ॥२८॥ वारहिवारकीजईवारककीजैमा  
 नु ॥ काहेकेसवजोआपुमेंसदावटेसनमानु ॥२९॥ शीति  
 विताभोहोइनहीभोविनुहोइनशीति ॥ शीतिहैजहंभोरहै  
 वहेशीतकीरीति ॥३०॥ गर्वचिसनधनत्यागतेनिछरवच  
 नप्रवास ॥ लालचविप्रियकरनप्रियप्रियतेहोउरास ॥  
 ॥३१॥ मानचिरहरनेविविधजहांविविधवधिवस ॥ केस  
 वरासकहैकछुकहियनचिरहप्रवास ॥३२॥ इति श्रीम  
 नहारजकुमारइंद्रजीतविराटनारसिकप्रियाया  
 विप्रलंभप्रणारमानमोचनोनामरसमप्रभाव ॥३३॥  
 अथकरुनारसलठन ॥ रोहा ॥ छूरिजातकेसवजहांस  
 पकेसंवेउपा ॥ करुनारसउपजततहंआपुनेअकुला  
 ॥३४॥ करुनाविरहा ॥ सबमेंदुखकोचरनियेवरननयो  
 हार ॥ तदपिप्रसंगहिपारकछुवरनतमतिअनुसार ॥३५॥  
 श्रीराधाजकोप्रहृन्नकरुनारस ॥ मैपठईमलिलेनसधी  
 सरहामिलिकेमिलिवेकहंअने ॥ जारमिलेदिनहीदिन  
 हतिरयालसोंदेहदसानवधाने ॥ प्रेरतुपैजकिंयंतनुप्रा  
 ननिजोगकेआरप्रयोगनिधाने ॥ लाजपैंवोलनपाऊन  
 केसवरोसेहिकोकुकहादुखजाने ॥३६॥ श्रीराधातकोराम  
 नाविरहा ॥ कवि ॥ हरितहरितहारुहरतहरतहोयहारहो ॥३७॥



हरिनैनहरिनकहलैहो॥वनमालीबुजपरवरसतवन  
मालीवनमालीहरिदुषकेसवकेसैंसहो॥हरयकमल  
नैनरंगिककमलनैनहो॥उगीकमलनैनऔरकुहो  
कहाकहो॥आपघनघनेस्यामघनहीसेहोतघनस्या  
मनिकेघोसघनस्यामविनुकोरहो॥४॥**श्रीकमल**  
**जीकोप्रवृत्तकहनारस॥**जैसेमिलेपद्यमधुवन  
मगजारमनुरवनभवनकीजैअलिकअलकमे॥स  
वुमित्तेमिलेनेनकेसोदाससविलासछविआसभ  
लिरहेकपोलफलकमे॥वेनमिलेमिलेपज्ञानसकुल  
सयाचसजितजिअभिमानुभूत्यातनकीरुलकमे॥ने  
सेछलवलसाधिराधिकेमिलनकहुवाहतकियोपपा  
नप्रानकपलकमे॥५॥**श्रीकमलजीकोप्रकासकरुना**  
**विरह॥**हेतरुनारंगनिप्रअप्रचप्रचरानंगप  
प॥केसवरासजहोजुमनोरघसंभ्रमविभ्रमभूरिभरे  
भया॥तकेतरंगतरंगिततंगतिमंगलसूलविसालनि  
केचया॥कान्हकछकननामयहेसधितेहीकियेकरुना  
वरुनालय॥६॥**अपप्रवासलनादिहा॥**केसव  
कौनहैकाजतेपिउपरदेसहिजाइ॥तासोकहतप्रवा  
ससवकहिकेसवससुगार॥७॥**गुणकोप्रवासविर**  
**ह॥**कवि॥जोनैकहामेरीहारघसासलैनेननवारही  
तेविधाहै॥माघोनहूषिहैसूषेनिहारोयषारोहीसुख  
कोनअन्हाहै॥सेहैकेसवकोरहैप्रावसअपनी  
पारसनाबहुकाहै॥केहुतीभोरकेभोजनेछाओपेपा  
नोनपीवैतौपाननषाहै॥८॥**श्रीगुणजीकोप्रवृत्तप्र**  
**वासविरह॥**कवि॥तेकरिहैकहिधौकवगोनहिन  
इकुमारतौगोनकियोई॥मोहिमहाडुरुतुरकोनरहेल  
रिलेजिनिकेधोलियोई॥सेसानचूकियेकेसवतोहिविवा  
स्वोनुवीचविवाहवियोई॥तेरेहिजीपजियेजिनकोजिय  
रेजियताविनुवजियोई॥९॥**श्रीगुणजीकोप्रकास**  
**प्रकासविरह॥**कवि॥कौनकेनप्रीतिकौनप्रीतमहि



हिषिछुरतिपाहीको अमाषोयतिवृत्तगारयतेहे। केसोहा  
 सयतनकरंहीभलेअवेहाथेअरकहापंछिनकेपाछे  
 धारयतेहे। उठिचलो जौनमानेकाहूकीवल्ग। जौनेमा  
 नसेजुपहिचातेताकेआइयतेहे। याकेतोहेंआजही॥  
 मिलोकेमारजाउकहिआगिलागंमेरा माईमेदुपाइयत  
 हे॥१०॥ **सीराधाजूकोविहभयभम॥ कवि॥** कोकि  
 लकेकिकूलाहलहलितुठाउरमेंमतिकीगतिल्ली  
 केसवसीतसुगंधसमारगयोउडिधिरजुज्योतनतली  
 जामिनिजामिनि केवजीजोहूकीजामिनियेंतअज्यो  
 सुधिभूली॥ कोजियोकेसीकोविस्सीवहुस्योविसि  
 नाविसवासिनिफूली॥११॥ **श्रीकृष्णकोप्रवासप्रवृत्ति**  
**विह॥ कवि॥** जितिवोलेसुखलअमोलसवेअंगके  
 लिकलो लनिमोललियो॥ जिनकोचितलालवीलो  
 चनरूपअनूपपिपूषसोपीयजियो॥ जिनकेपपंरकेस  
 वपानिछियेसुखमानिसवेदुषहरिकियो॥ जिनको  
 संगछूरतहीकिरेफुरिकोरिकरुकभयोनहियो॥१२॥  
**श्रीकृष्णकोप्रवासप्रवासविहकवि॥** केसव  
 कोहंचलोचलिकोरिसंदेसकहोपुनिपेंडकहूर  
 आगेधरेअपनोसोकेसाहसपीछेहंपेलिपरेपगभू  
 पर। होतजहीतहीठाठेठगेसेचलोनकहोपरेकाहूहि  
 तूपर। लोककीजाजफिर्यानपरेसुभितानकरेदस  
 कोसकेजुपरा॥१३॥ **श्रीकृष्णकेविहभयभम॥ कवि**  
**॥** वानपांनपरिधानपुनिजानगानदुतिअंग॥ स  
 भसंजोगवियोगविनुसातोसुषतिअभंग॥ पेतकीना  
 रिज्योतारेअनेकचढाचलीचिनयेवहंघातो॥ कोवि  
 तिसीकुहुंदेकरकेजनिकेसवसेतुसवेतनुतातो॥ भे  
 दतिहेवरहीअवहीतोवरागईहासुषेसुषसातो॥ के  
 सीकरेंकहिकेसेवचोवहुरेंनिसिआइकियंसुदुरा  
 तो॥१४॥ **आशिकाजूकीनिद्रा॥ कवि॥** आसते  
 आवेगाआधिनिआगेहीडोलतिहेमनोमोललहे



सोवेन सोवन रेन ज्यो तव सोवन में उन साय रहि है  
मेरा ये भूल कह्यो हों के सब सो निकट हैं सहेली भ  
रि है ॥ १५ ॥ श्री कृष्णजी की निद्रा ॥ कवि ॥ के सब के सें हों के  
रिउ पा निशानि सतौ उर लागति है ॥ वकवौ धति सी  
चितवै चितमें चित सोवत हूं मदि जा गति है ॥ परदे सपि  
या पल मोहि पत्मातिन या की कहो धों कहा गति है ॥ त  
जिने न निनी रन वोढ वध लडु आधिक गति ते भाग ज  
ति है ॥ १६ ॥ श्री भाषिका की सपना का पत्र ॥ श्री कृष्णजी सा  
॥ कवि ॥ के सब कुंआर वष भान की कुंवरि वन देवता ज्यो  
वन उपवन विहरति है ॥ कमल ज्यो धिरु न रहति कहें एक  
होर कमलानुज ज्यो कमल निजें जरति है ॥ काली ज्यो न  
कैतकी के फूल के चैसी ताज ज्यो निसि चर मुख चंदे बंदी  
उरति है ॥ वरन उधारत ही मदन सयोधन हिरो सही ज्यो ना  
उस हते रो रति है ॥ १७ ॥ भोरि नी ज्यो भवति रहति वन वा  
धिका निहं सिनी ज्यो मृदुल मृनालिका वहति है ॥ पिउ  
पिउ रति रहति चित चात की ज्यो चंदु बितै चकई ज्यो बुप  
देरति है ॥ हरि नी ज्यो हेरति न के हरी के कानन हिं के का  
सनि त्याली ज्यो विला न हो वहति है ॥ के सब कुंआर का  
रु विरहति हारे से सासरति न साधिका की मूरति ठाहति  
है ॥ १८ ॥ श्री कृष्णजी की सपना का पत्र ॥ श्री राधिका की ॥ १  
रघरी निवसे के सो गइ के सरि ज्यो के सरि कों देखें तच क  
रि ज्यो कंपते है ॥ वासर की संपति उलूक ज्यो न चित वत व  
कवा ज्यो चरचितै वोरु नो चपते है ॥ के का सुनि आल ज्यो  
विलात जात घन स्याम घन न की घोरे जवा से ज्यो तपत  
है ॥ भोर ज्यो भवत वन ज्यो जगतरै निसंकर ज्यो स्या  
मना मते रो जपते है ॥ १९ ॥ दोहा ॥ के सब दास प्रवास के  
कहो यथा मति साजा ॥ राधा हरि वाधा हरन वरनो सषी  
समाज ॥ २० ॥ ॥ ॥ श्री मन्महा राजकुमार इंदु जी त विरवि  
त भाव सिकि पायो संभोग गृह प्रवास विरह वत नैन



माका दा प्रमावा ॥ १ ॥ अथ स राजन वर्नना ॥ दावा  
 ॥ धाजनी नाशिन नदी प्रगट परोसि निनारि ॥ मालि  
 निवर ॥ निशिल्य नीचुर हेरनी सनारि ॥ २ ॥ ॥ ॥ ॥  
 सन्यासिना पट्ट पटवा कीवाल ॥ केसव नारक नारका  
 सपी करहि सव काल ॥ ३ ॥ ॥ धाको वचन प्रीति ॥  
 सो ॥ मोहन सायक हानि सिधो सरहे सतरंजहि को  
 मिसवेदा ॥ केसव क्यों हूं सने महतारी तो राषि है राघ  
 रही मह पेदा ॥ हो सिधु सुषरे सिध तो हि ते मोह चढा  
 ॥ कै डी ठिग्र मेदा ॥ कोन ले डे ती सरुपन को है तही क  
 छु जात अकास हि सेदा ॥ ४ ॥ ॥ धाको वचन प्रीति ॥  
 सो ॥ थोरी सीस रे सवे सरी घन यन के सगौ री जू सी गो  
 री मोरी भवजू की सासे सी ॥ सवे की सी दारी अति सरु  
 म सु दार करि के सो रास अंग अंग भां के उतारी सी ॥ सो  
 धी की सी सो धी रे हस धा सो सु धारी पाउं धारी देव लोक ते  
 कि सिधु ते उधारी सी ॥ अज पा सो हसि धेलि को लिवा  
 लिले डुलाल का ल्हि रे सी वालिल्या अं काम की कुमा  
 रा सी ॥ ५ ॥ ॥ जनी को वचन प्रीति ॥ सो ॥ सो भा को सघ  
 नुचनु मे रो घन स्याम नित नई नई हवित न हेरत हिरा  
 ये ॥ के सो रास सकल सवास को निवास करि विविध  
 विलास हास जस बिसराये ॥ भुषर सकेत कुम हूष  
 र समी ठी है पिष हू की पे ली घा है जा की निर्धारये ॥ ६ ॥  
 री वीर ने न निचरा स सुषु को तु जो लोपि मन माह मन  
 मोहें मे नुं मै लिन चराये ॥ ७ ॥ ॥ जनी को वचन प्रीति ॥  
 ॥ से सी वा ते र सी हो धो के से ही कही परति जा की मति ग  
 तिलाज पार सो ल ये रा है ॥ मेरे हूं न अचे मेरी वीर सती वे  
 रे वे तो जानति हो धाही के साध लो हिले रो है ॥ से सी तो है  
 चरि नि की चे रा वा की के सो रा जै सी त महा हा करियां  
 परि भें रा है ॥ जानति हो न रज के वे रा हो जू जा मो के सिवे कु  
 तो उत हि दुष भान जू की वे रा है ॥ ८ ॥ ॥ नाशिन को वचन प्रीति ॥  
 रावा जू सो ॥ अ वही तों गट पुनि पों रिह लौ न पे वो लन रास  
 जा हि रा पा छे हिलारों ॥ करि होत व के सी परा लो दो रा है



है कछु निसि दे सके जोगे जो नरघोष के सब के से  
है वन ही मधुसूयाम सभागे ॥ देति हो जान क्यों राव  
तिका हेन ग्यारसी जोग करि आधिन ग्यारगे ॥ ७ ॥ नारी  
निको वचन श्री कृष्ण सो ॥ वडा जिय लाज वडो डरु ग्याली  
वडा लडुग्यो नवले चितु लाने ॥ वडा वडा आधि वडा छ  
विसो चितवे वडा वेर वडा सुषरीने ॥ वडे हा विचार वडा  
रुविके सब को है मिलो तो मिलो हम हीने ॥ वडा निहें सो  
तो वडे दुष को लै ते वडे मान वडा मनु को ने ॥ ८ ॥ नारी को  
वचन श्री कृष्ण सो ॥ जो हो रिषा वन तो हि गरी तो ते  
मरी ये गहा फार मारी ॥ आजु कहा रिष साध लगी  
हे रिष जुगी जा तो वेर कन्हारी ॥ रवे ते सारी जाति भर्य  
नरेषे जे सब हे अधिकारी ॥ रातिका वेगति घोस की ॥ अ  
हो तेरी ये वात निवा जहि आरी ॥ ९ ॥ नारी को वचन श्री कृष्ण  
सो ॥ जही जही दुरे तही जो नहें सी जग मंगे के से है जो  
के सब दुख लिये रंग की ॥ वन के पंच अलि अलिनी के  
पीछे अली अलिनी जोगी फिरे जिने है साध संग की  
निगर अमित बहत है मिलि रे करिय के से के मिला  
गति मो पेन विहंग की ॥ १० ॥ कुतो दुसह दुपुरे ति दुती हती है  
जंवी सविसे विसवास भई वा के अंग की ॥ ११ ॥ पारी सनि  
को वचन श्री कृष्ण सो ॥ पार पार पालका पर सो सल  
गारति तो लन मे लिरती हो ॥ सो है किये मुहु सो हो किये  
अवलो तम पे गति से सान ही हो ॥ के सब के से है देवन को ॥ १२ ॥  
जिके भोर ही भोर है आनि रती हो ॥ पान पवावत ही ति न  
सो ल म्हा तिक हा सतरा ती हती हो ॥ १३ ॥ पारी सनिको  
वचन श्री कृष्ण सो ॥ हो सी मे वात क वा सो क ही हसि वेदु  
कहा सहिते करि लेयो ॥ आधी मिलान मिली सवीया  
मिलि कोर स के सब को अवेर्यो ॥ विचार मरी बुप सा  
धो कि वात क स्वाति सम ही अवे सविसे यो ॥ आजु हि  
क्यों वहावति ही जिहि आ गिल गे हन आंग नुरे यो  
॥ १४ ॥ नालि निको वचन श्री कृष्ण सो ॥ डुरि है सो भू  
वन वसन दुति जो वन की रेह ही की ज्योति हो ति घोस



रसमगति है नाहको सवासलागें दे दे के सी के सब सभा  
 वही की वास मोर भार फारे धाति है रे धिने री मूरत की स  
 रति विसरति हो लालन के दृग रे धि वे को ललपति है  
 वलि हे वें चंद मुखी कुचनिके भार भये कचनिके भार तो  
 लचकि कटि जाति है ॥ १३ ॥ **मातिनिका वचन श्री कृष्ण**  
**सा ॥** घेरी जनि मोहि घर जान दे दुषन स्याम घरी कमें ला  
 गी उर रे धि वा ज्यो रानिनी ॥ होइ को उर से सी वे सी आ वेशत  
 उत के सब हवष मान जकी वेटी गजगामिनी ॥ आरित  
 को आयो अंत आउ वनि वलि जाउ आ धवती है वे ऊवनी  
 न आइ अरु जानिनी ॥ काम के उर में तम कुंज गहो के सौरा  
 र मोरन के भय भौ न गहो उन भा मिनी ॥ १४ ॥ **तरनिका**  
**वचन श्री राधिका सा ॥** यथा कवि ॥ मै नु स सौ मनुष  
 दुःख दुल मना लिका के सत के से सर धु नि मन हि हरति  
 है राखों के से बीज रांत यात से अरु न आठ के सौरा सरे  
 विदग ग्रान र भरति है ॥ रा मे रा ते री मोहि भावति भलाई  
 ता ते दूकति हो तो हि अरु कति डरति है ॥ माधन सी जी भये  
 मुष के जसो को वरो कहिका ठ ते कठे ठी वा ते के से निकसति  
 है ॥ १५ ॥ **वरातिका वचन श्री कृष्ण सा ॥** ने न निन वा को  
 ने कु अनि हा अनी तिकरी जान तन तम जे से वृज जानिय  
 ते है ॥ वे वल चरित्र विचर कवर किला वो चोर के वितनि  
 अभिसार सो पिय ते है ॥ एक नि के पे ठो उर उर उर जनि मे  
 उर ते के सौरा के से तजिय ते है ॥ रो सी कहें होति है जवा  
 लनिके चोरि को रि मन मन मय ॥ ही के क हों थ वे चिय हा  
 ते है ॥ १६ ॥ **शिल्पीनी को वचन श्री राधा सा ॥** यथा क  
 ॥ अव ही सनि को ली रा चो लल गज क यों रि दु लो उठि  
 जान न ही नें ॥ मेरे हा जान भई ले रा त म ही वस के सब  
 हे कहि वे क दु की नें ॥ जो पैं र तो दुष पावनिके हो त ले फेद  
 गमान में नौ जल ही नें ॥ तो कत छी उति रो छित स कु रहे  
 किन चि ज्यो हा थ हि ली नें ॥ १७ ॥ **शिल्पीनी को वचन**  
**श्री कृष्ण सा ॥** यथा क ॥ वोर चरी जिम दूर रहे गहि बो  
 र कु ठोर नि जानि न जाइ ॥ लाजन आवति मारे सभा ज



नलागे अलोक के ताजन ताहा कोरि विचार विचार दु  
के सदरेष हवहि हित सब काह निहहि कै फि रलागुद  
संगन ननाने को संग उर निवाह ॥ १८ ॥ **चुरहेरी को वचन**  
**आराधन सो ॥ धया क ॥** मन मन मिलै कहा मिलि हे मि  
ले को सष मिलि हूँ रे वदु बोलाइ काहवाल सो ॥ भूलि प  
रे भोहे निहावां धि हो किते करिन वां धो वलि जाउ रन माला  
वन माल सो ॥ सुह मोरे मोरे न मरत हिस के सो रास रां रमा  
रुधौ मेरे कहै कहै कमल सनाल सो ॥ नैन निही विह  
सि विहसि को लोवालि हो हो कव दूतौ वोलिये विहसि सु  
बलाल सो ॥ १९ ॥ **चुरहेरी को वचन श्री लाल जी सो ॥ क**  
आ पुन है जे दुषा दुष जा के होता हिक हा कव हं दुषरी जे  
जा विनु और सहारन के सवता हिस हास तो सवकी  
जे भाग वडे जरूरी तम सो चह तो विचार कहै कहली  
जे जोरिस जातौ जो समना वनता तो हे दधु से राइ नपी  
जे ॥ २० ॥ **सुनारि को वचन आराधन सो ॥ क ॥** लोल अमो  
ल कटाछ कलोल अलोक तसो पर चौ वालिक फेरे पा  
निप सो अति पेर सा ल विसाल दनै मन भावत मेरे के  
सव कुनै वोगुनै चोषे चिते कै भास हरि न्याहि चरे सो  
चस को चन आरति रोचन धीर ज सो चन लोचन तेरे ॥ २१ ॥  
**सुना ॥ के वचन श्री लाल जी सो ॥** हासी में हसे ते हरि हारे  
कें रुक विमल हरि के हसति हेरि हिये अनुरागी है ॥ बेम  
कापहेली गूढ जानति जना वनिहा आनु अधरात कलो  
मेरे संग जागी है ॥ अवलौ ज्यो धरा धीर ते सेरिन है कओ  
रधारो गिरि धरत मतें को नव उभागी है ॥ भावती तिहा  
रा बहकाहि ही ते के सो रास काम की कथानिक छुका  
नरे नलागी है ॥ २२ ॥ **सुधजनी को वचन आराधन सो ॥**  
**॥ क ॥** कोमल अवल वेतौ अमल सती छन चल मलि  
नन लिन नवनील के से पात है ॥ सुधे साधु सुहवेतौ कु  
रिल करम सो के सव परम वोर मरम किरत है ॥ पाहि  
पकरित च पाई है न के से हूँ तयोरो अदिलाति वेतौ अ  
ति अदिलात है ॥ वरजति वयो न त है कव का कहति मे



३० रमोहन के मन तेरे नैन छे छे जारा ॥ ११ ॥ राम जना का  
 वन श्री कृष्ण जी सो ॥ कौन हूँ तोष कह भयो के लव का  
 मिना कोरि कसों हिनु गये ॥ रच कसा धस धस को वित्त  
 राधे को आधो कलौ वन डोये ॥ वयो धरि सीतल वासु करे सु  
 बजोर भवा घन सार के सारे ॥ लाल चहा घर हे वजन थये  
 प्यास चुजा तन वौस को चाहे ॥ १२ ॥ सन्यासि निको व  
 न श्री राधिका सो ॥ क ॥ न छुरि हे छु डार जव करि हो धी  
 के सीतल के सो रास अनया सप्या से भूष भागि हे ॥ पल  
 भूति जागो जु डुगो न चित्र वेति कछु न सहार ॥ गोर ते  
 सहस गुनी उपति पेरै गोर से सीतल क आगि हे ॥ सेउ सो से  
 डाहि जनि अंचल उडात आति आउति हो का हू की नुडी  
 दिउ डिता गि हे ॥ १४ ॥ सन्यासि निको व वन श्री कृष्ण सो  
 ॥ १५ ॥ सीतल न ही तल तिहारे न वसति वहतु मन  
 ता तजति निल छो को उर ता पगे डु ॥ आपनो जौ ही रा सो प  
 राहा छ व जना थरे कै तो आ का थ साथ मे न से सो मनु ले  
 हु ॥ एते पर के सो रा तु मे न प्रवाहि वाहि व हे ज क लागी भा  
 गी भूष सुष भू लो दे डु ॥ माडों सु दु छा डो छिन छल नि छ  
 वी ले लाल से सी तो गवारि न सो त म ही नि वा हो ने डु ॥ १६ ॥  
 पश्य निको व वन श्री राधा ज सो ॥ कवि ॥ या ही कौ मे  
 गुसा नि मे पहिले मिलै वति को कलि छे लो ॥ वान मि  
 ले ॥ अषिया मिलै सिधिया निको अषि नि पारि के अलो ॥  
 अषि मिले सुह सो मिलि हे मनु ले हु मिले वगे हे द म गे लो  
 मिले मनु माई क हा करि हो सुह हो के मिले तो कियो मनु मे  
 लो ॥ १७ ॥ गेह के नेह के रेह के रे की के भूषन की जिन भूष भ  
 गी ॥ मोहि ह सी दु प दो उ र ति न हूँ सो जना वति हो च उ रा  
 र ॥ के सव राइ व डारि री तो कह भयो जाति सभा उन जा  
 र ॥ सो ने सिंगारि हूँ सो धी व नान पीत री की पित री धि  
 जाई ॥ १८ ॥ पर धन को व वन श्री कृष्ण सो ॥ वासु गने नी  
 जौ आर नि हूँ तु लगवत हो सुव अ से न हूँ जौ ॥ सो नौ र  
 सासन पीत री हो तो के सब के से हूँ हा थ न छे जौ ॥ आ रा  
 उ गिरा गु तु जौ सिध वेत उं का कुन को किल जौ क ल हू



जो संस्थां सुविशुद्ध कुरु अमकी साधन अ  
मली रज ॥ २४ ॥ वयन अयन सधमयन कर कहे सधि  
निके मर्म ॥ केरा वक हो कुरु अतिन के को विदक  
॥ २५ ॥ ॥ ति आनम हारा ज कुमार ॥ ३३ ॥ ती त विरा  
विना वार मिक प्रिया यो मयी जन वन नैना म हार म  
प्रभात ॥ २६ ॥ सिद्धा विनय म नारा ॥ को मिले वो मिल  
वे कर हि सिंगार ॥ कुकि अरु देहि उरा हनो यह तिन को बो  
हार ॥ ३७ ॥ श्री राधिका जकी सिद्ध ॥ ना दुल गे सुह सों ति  
देहे दिन ना ही लगे दुष दे दुहे गे ॥ ना ही अवे सधु हे ति हे  
के सव ना दु सरा सधु हे तर हे गे ॥ ना ही ते ना ही री ना  
ही म नारी मली सवु ना ही ते पैं के हे गे ॥ ना ही सो ने दु  
निवा हि वला री लो ना ही सो ने दु क हानि व हो गे ॥ ३१  
श्री कल का सिद्धा ॥ कुं कु म उ वरि कुं सु कु म के नू वा  
र जल सो धो सिर ला रय हि ला एक हारा समे चंद नु व  
दा फु ले फु ल य हि रा भू ति वे ही का ज अ जि मा जि  
का ना हे प्र का समे ॥ के सव क प्र प्र रि का हे कौं व वा  
वो पा न जो पे म च म ग न हे अ से ही विला समे ॥ तो वा  
ही न म ना वो हरि हा हा करि पा रय रि स व री स वा स व  
से जा के सध वा समे ॥ ३२ ॥ श्री राधिका ज की विनय  
॥ अ से ही के जो बु पु हे र हि हो स धि हो सहि हो सत रा ह  
र सो लो ॥ के जो सरि हे मि लि वे वि नु तो हि त चं मि लि  
ये मि लि हे रि न जो लो ॥ के सव को रि को उप चार मि ले  
को क हा मि लि हे सधु तो लो ॥ रेषि धो अंग नि आ र सी  
ले मि लि हे पि च सो म न ही म न को ले ॥ ३३ ॥ श्री राम  
जी को विनय ॥ सध के से फु ले ने न रा सो से र स न अ न  
ला तु से अ धर हा सध सो सध सो हे ॥ वें ना पि के वें  
ना वि वे ना सी व नार वी र वा र कु वा ह सो करि हा को क  
रि हा लो हे ॥ की ने कु व अ म त क ल य न रु के से फ ल  
के सो रा स जा ते वि धि सु ग क वि वा लो हे ॥ दे वी न गु ण  
ल स धि मे रा को स रा ह स वु सो नो सो स वा रि मा नो मे न



सो सब सो है ॥ ३४ ॥ श्री गणेश का मना ॥ नो ही सिपाव  
ति ना ही भली सपि जाव कैं तिन को मु दू डो ॥ भू  
हनि को भुलवो धमना वनि ने ननिके मन सो हितु वा  
हो ॥ राजु करे यह राजु सरा है के सब चित्र ज्यो आ मे ही  
वो हो ॥ काहि ते काली के दो नें रई ह सिपा र पोर न वरी  
मुह को हो ॥ ३५ ॥ श्री गणेश का मना ॥ री गिरि का  
रु रोष निजा धिरो मुषरे धि रिसा र सु सभा हो ॥ वो ल  
न ग्रा म अवा ला भ अ व के सब से सो हे मे न स हा ही ॥ मे  
वहु ते वहु रा है तो सीरी त्व हर वनि मो हि ह था ही ॥ स  
पा ही स वी न स रा व ति हो हरि सो ह सि हां करि मो हि सो न  
ही ॥ ३६ ॥ श्री कृष्ण का मना ॥ भूषन रे दु म ना र के  
के सब फूल वनार वनार के वागे ॥ भा गु व दार स हा गु व  
दार के रा गु व दार हि ये अ नुरागे ॥ पार नि ला ग त सां धो च द  
द न पा न व वा व त ही नि सि जागे ॥ का न्द व लो उ र्वे दे क  
हा म नु मू सि प रा यो व रू स न लागे ॥ ३७ ॥ श्री गणेश का  
मिलि को ॥ दु ल भ रे वि नि हू को सु ते हरि को म च रा सि नि  
ही हरि ली नो ॥ रा दु जे हि प ते क व हू अ व ज्यो गुर को रि  
यो मे च पु वी नो ॥ से त लि पो त न मा न डु का हू सो मा नि  
हू वारि न डु पु न वी नो ॥ मा ग न आ वे तो री जे भ रू अ प नो म  
नु ज्यो व हू जा र न री नो ॥ ३८ ॥ सध के मिलि ॥ आ ज्य  
रि वारी की रा ति जु की जे स आ ज्य के दो स लो हू हे स भा गी  
वा त सु नो ज न नो पे ज ही त व ही म ति मा न क नी र ते जा  
गा ॥ अ ग सि गारि नि हा रि नि सा त न चि त्र वि हा र नि सो  
अ नुरा गी ॥ रा पे रे रे वि नि जा र नु वा मि लि के स व रा सो व  
त न ला गी ॥ ३९ ॥ पुन क वि ॥ जो हों ग नो ओ गु न नि  
तो तं ग ने गु न ग न जो हों ग नो गु न तो तं ओ गु न के ग न  
में ॥ के सो रा स से श ति छ पा व ति छ ल नि मं जे से छ वि  
छ रि छ रि छ रा छ पे य न में ॥ भा री है नि ह र नि सि भा  
भ या व नी में सो को व से घ रा को पा उ व से व न में ॥ वे वे तें  
उ ठा वे उ वि व ले ते म व ति रे सो र्या र को न क है जो हे ते र



मनमें ४० ॥ श्रीलक्ष्मीकासिंहिका ॥ सिधेहारीसपीउरवा  
इहारीकारविनीरातिनीरिवाइहारीरिसअथातकी  
मारिमारहायोमारतिरुकिरुकिहारीहारीरुकरनि  
नित्रिदिभगतिवातकी ॥ ४१ ॥ निरदईरवाहिकहोअसीम  
तिजारतिजेरनिरिनराहुअसेगातकी ॥ कैसेहूनमाने  
होमनाइहारीकेसोराइवोतिहोरीकोकिलाबुलाबुला  
इहारीवातकी ॥ ४२ ॥ राधिकाकासिंगार ॥ हीनोमेंपाइ  
निकाइमहावरुआजोमेंअजनआधिसहाई ॥ भूषनभू  
षितकीनेमेंकेसवमात्मनोहरमेंपहिराई ॥ दयनेले  
अवरीपतिहेधिसपीसवअगसिंगारसिधाई ॥ वेंकवि  
लोकनिअंकलेपानषवावेकोकांनूकमारकिनाई ॥ ४३ ॥  
श्रीलक्ष्मीकासिंगारकवि ॥ पागवनीअरुवोगो  
वन्योचुवापुकाकरिरकरिनीको ॥ सोधोवन्योअ  
तिचारुचठावतहारवन्योउरभावतजीको ॥ वीरावन्यो  
सुषधातमनोहरमोहिसिंगारलगेसवकीको ॥ भास  
भलाविधिजोलेगुपालकीजोउहिवालवनाइनरीको  
॥ ४४ ॥ मुखकोमुकिवा ॥ जुतरहेइहगांचभटसुहकांनू  
कोनावजुलीजतजैहे ॥ जागेतुमारीहेकोनैहीकोक  
रीघोरेहेंछैलछवालीजोतैहे ॥ वातसंभारिकहोसनिहे  
कोऊआगिलावेकोऊतरकैहे ॥ कांनूहीमारीतोवा  
रीहेवावरीतउनसोंकैसेगारिहैरेहे ॥ ४५ ॥ श्रीराधिका  
कासुकिवा ॥ फिरिफिरिफेरिफेरिफेरोमेंहरीकोमनुमन  
फेरैफेरफुनिभागकीभलीघरी ॥ पलपलपाइनुपरति  
हुतीजिनिकेसपायोपाउतेरेपाइपाकेपाइहोपरी ॥ व  
डेनिकावेरिनिकीवडीयेवडाईमेंरीकेसोराकीसोंमेंत  
याहीकोवडाकरी ॥ मेंतोजामोमनाएतेमेरेगुनमनिहे  
रीमेंप्राहकोमनाइजुतेमोहूकोमनीधरी ॥ ४६ ॥ केस  
वरावुलावतैहेचितवारुसुलोचनिवेनुकोज ॥ कालि  
कलेवरसकुविमोपरवासवितेंवनतेनरयेज ॥ आगित  
गेतेरीकालिकेसीसपरीपरज ॥ वजागियोज ॥ आज



मिलोनमिलोवजराजराजहिनाहिनाकेहेराजुकरे  
 जू॥४६॥**कमकाकुकिवा॥**तामोवसाइकहाकहिके  
 सबकामलतातरुतेदुरई॥विधिकीलियिलोपिनजा  
 रमोलिकलेमनिसीसभुजंगरई॥अपनेमुहुदेष्टुआ  
 रसीलेपुनिवातकहोपरिमानलई॥धुभानसुतासर  
 आरसहागिलवाउजहांलगुजीभगई॥४७॥**धीरावा॥**  
**कोउगहना॥**केसोरासकोनवडीरूपकूलजानिपेअ  
 नाकोसकतेरेहीअनषउरवोलिये॥आपनेसमानका  
 हमानसेनमानेतंगुमानकेविमानवेटीव्योमव्योम  
 डोलिये॥सेंडुसोअंदाइअतिअवलुउडाइसीछो  
 डीअंउवेडाचितवनिनिमोलिये॥दीनोमनहाथजिहि  
 हागसोहरिषकेताहरिसंहरितनेनाहरेहंतोवोलिये  
 ॥४८॥**धीकलकोउराहना॥**सोहानिकोसोचनसको  
 चकाहवाचकीकोपोछोप्यापकपोवलोचनकिना  
 रेकी॥माघनकीवोरीकीहैथोरीथोरीमोहसधिजान  
 तिबेहेकिसोरीजोरीहैजुवारेकी॥मेरायेकुमतिओर  
 कहाकहोंकेसोराइलागतिहेलातलाजइहांपाउंण  
 रेकी॥एनाहैहुडाईवहअवहीरुवाइवहछारऊतोछू  
 टीनाहीपाइनिकेपारेकी॥४९॥**अंधीसीधाहैराइरि**  
**वारीसीदासिनिकेडुषरेहरहीहै॥**तापकेतलतमोरिनि  
 मालिनिनारनिनाहकेनेहनहीहै॥तेरीसोंतेरीसोंमेरी  
 सपीसुनितेरीअकेलीकीआसरहीहै॥कान्हूमिलार  
 केमोहिनपाइहैआपनेजीकीमेंतोसोंकहीहै॥५०॥  
**॥॥**इहिविधिस्वामसिंगारसबहुविधिवरनहुलोइ॥  
 चारिवरनवहुआअमहिकहतसनतसुषहोइ॥५१॥**अ**  
**वेहासलछिनकहोंकहेयथामतिसाज॥**मनसावावा  
 कर्मनावरनतहेकविराज॥५२॥**अंतथीमन्सादागाने**  
**कुमारइजीतविरवितायोरसिकप्रियायासखिवने**  
**ननामवधारणभावसमाधायसिंगारस॥५३॥**राम  
 अथहासलछन॥दीहा॥नयनवयनकछुकरतजवम ३२



नको मोर उरोत। लतर विजय हिवा निकेत ही हास्य रस  
होत॥१॥ अथ हास्य भेदा॥ दोहा॥ मेर हास कल हास  
पुनिक हिक सब अति हास। को विरक विवर न दुंसे वे  
अरु जो घोपरि हास॥२॥ अथ मरहास लक्षण॥ विक  
सहि नयन कपोल कछु रसन सवन के वास॥ मेर हा  
स ता सों कछु हत को विरके सब दास॥३॥ वरन त वा  
देयं घति हि कहै न के सब दास। ओरो रस यों जानि यों  
सब प्रकृति प्रकास॥४॥ श्री राधाजी को मरहास॥ वे  
ठति हेति न मै हठि कै जिन की तम सों मति प्रम पगी  
है। जानति हो न लग जद मै ती की दूत कछार सरंगरी  
है। प्रजेगी साध सवे सुष की बडे भाग की के सब जोति  
जगी है। मेर की वात सनेतें कछु बह मास कते सुसि  
कान लगी है॥५॥ पुनः॥ जानै को पानष वा वन के पाई  
गरि मिश्र गुरि कोटन वीनें तें चित योत वही तिहि  
भाति जु लाल कै लोचन लीलि से लीनें। वात कही ह  
रये हमि के सुनि में समुझी वेम हार सभा ने। जानति हो  
पिय के जिय के अभिलाष सवे यरि पूरन कीनें॥६॥ श्री  
कामजी को मरहास॥ रसन वसन महि रसे रसन दु  
नि वर सिमरन सर करति अचेत हो। सोई कल कति लो  
ल लोचन कपोल निमें मोल लेत मन क्रम वचन से मत  
हो। भौ है कहें देती भाव का हू मेरी भावती के भावत छवी  
ले लाल मोन को नहेते हो। के सब प्रकास हास हे सि  
कहा ले दुगे जू ऐसी ही हंस निती हिय निहरे लेवे हो  
॥७॥ अथ कल हास लक्षण॥ जहो सनियें कल धुनि  
कछु कामल विमल विलास। के सब तन मन मोहिये  
वर न दुं कविकल हास॥८॥ श्री राधिका को कल हा  
स॥ कवि॥ का छें सिता सित का छनी के सब पात र  
ज्यो पुतरा निरि चारो। कोरि कर छिने वे गति मेर न वा  
वत लाइ कुने दुनि न्यारो। वात ते हे सुहास सुदंग स  
हा पति ही पति को उजियारो। देखति हो हरि देखि त नैय



हहात जु आंघिनिहमैं अकरो ॥ १० ॥ पुनः प्रेमघने रस  
 वेन सने गतिने नमि की सरसै निमई है ॥ बालवहिक  
 मदापति रेह प्रितिक मकी गति ली लिलहि ॥ मोहै वर  
 रस घनि दु रा रते सु सक्पा उतै चितई है ॥ के सव पाई  
 है आ जु भलै चित वोरिले काहि जु बालि गई है ॥ १० ॥  
 आ कल का कलहास ॥ आ जु कछु हरि तो सो सवी वाड़ी  
 कार लौ वतै कहार स भीनी ॥ मे लि गरे पदु का पुनि के ल  
 वहारि हिये मतुहारि सी की नी ॥ मोहि अचं भो महास  
 हहा कहि वां हकहा वदु वार निली नी ॥ ते लि रहा थरयो ॥ न के  
 उनि गांठि कह हसि अचल दीनी ॥ ११ ॥ अथ अतिहा  
 स लखन ॥ ११ ॥ जहां हसे निरं स के के पगरे सुष मुष  
 वास ॥ आ धे आ धे वर न पद उ पजि परे अतिहास ॥ ११ ॥  
 आ गवाज का अतिहास ॥ क ॥ ते सी ये जू जगत जो  
 निसी स सी स फूल नि की ऊल कतु तिल कुत रु नि ते  
 रे भाल को ॥ ते सी ये रसन दुति र म कति के सो रा स ते सी  
 रिल सत लालु कंठ कंठ माल को ॥ ते स थि च म क वा वि  
 बु क क फल नि की ऊल कतु ते सी न क मो ती च ल चाल  
 को ॥ हरे हरे हसि नै क चतुर च पल में नी चितु च क चौ धे मे रे  
 मर न गो पाले को ॥ १३ ॥ श्री कल का अतिहास कवि  
 ॥ गिरि गिरि उठि उठि गिरि गिरि किला गै कंठ वी वी वन्या  
 रे होत छवि नारी न्यारी सौ ॥ आपु स मे अकु ला आ धे अ  
 धे अ ध रानि आ छी आ छी वा तै क है आ की क पारी सौ  
 सुनत स हार स व स मु र परे न अ च के सो रा र का सौं दु रि  
 रे वें ह दु सारी सौं ॥ तर नित नू जा ती र तर वर तर दा दे ता  
 री रे ह सत कुं वर का हू पारी सौं ॥ १४ ॥ अथ यतिहास ल  
 खन ॥ १४ ॥ जह परि जन सव हसि उवे त जिरं यति की  
 कांति ॥ के सव को न हं बु धि वल सो परिहास व धां नि  
 ॥ १५ ॥ कवि ॥ आ रे हे एक महा वन ते धिय गा र ति  
 मानौ गिराय गु धारी ॥ कुं दर ता जनु काम की का मि नि  
 को लिक घोर व भान दु जार ॥ गो पी के ला र गु पाल हि वे अ

ने

राम

३३



कुलाशमिलीउरिसारभारी॥ केसवभेदनहोभरि  
अंकहंसीसवकीकरेजोयकुमारी॥ १६॥ अथकस्त  
रसलछने॥ दोहा॥ प्रियकेविशियकरनतेअरुना कत  
रसहोत॥ १७॥ श्रीगजाजकोकरुनारस॥ कवि॥  
तेजसरसेअपारंवेइमासेसुकुमारशंभुसेउदारउ  
रुरधरियतेहे॥ इजसेपुपुपरेरामजसेरनसरेका  
मजसेरुपरेहिपेहरियतेहे॥ सागरसेधीरगनपति  
सेवतरअतिसेअविवेककेसेरिनभरियतेहे॥ न  
दुमतिमंदुमहाजसौरासोकहोकहासेसोप्रतपाइ  
पसुपालकरियतेहे॥ १८॥ श्रीकस्तकोकरुनारसक  
विनु॥ चयेकीसीकलीभलीकेसवसुभरीरुपकीसी बीस  
मंजरामधुपमनभाईये॥ देसकीसीवानीअतिवानी  
तेसयानीदेवराजाकीसीरानीजानीजगसुपराईये  
कामकीकलासीचपलासीकामअवलासीकम  
लासीदेहधरेपरेपुन्यपाईये॥ कौनेकीनीनिपरकुजा  
तिजातिगालिरेसीराधिकाकुंवरिपाईगौरसविवा  
ईये॥ १९॥ अथकोरसलछने॥ दोहा॥ होइगेंदुसको  
धमपविशहउयसरार॥ अरुनवरनवरनतसचैक  
हिकेसवमतिधीर॥ २०॥ राधिकाकोसंदुरसकवि  
॥ केहरीकीहरिकरिकेकीमृगमीनफनिसकपि  
कंकंजधंजरवरनुलीनोहे॥ मृदुलमृनालविचंच  
पकमरालबेलकुंकुमराडिमकहंहनोदुषुहीनोहे  
जारतकनकतनुतनकतनकससिबटतपरतव  
धुजीवगंधहीनोहे॥ केसौरासरासभरकोविरकुं  
रकान्हराधिकाकुंवरिकोयकौनपरकीनोहे॥ २१॥  
श्रीकस्तकोकरुनारस॥ मीडिमात्योकरुनारस  
कोरिकेसौरमात्योअभिमानभारीभयभानीहे  
सबकोसहायअनुरागुलुरिलीनोहीनोराधिकाकुं  
वरिकहेसवसुषसान्योहे॥ कपूरकेपेटिगुणानिय  
रकेअरनिसौभेरीपहिचानिहसमेहंयहिचान्योहे



जीतो रतिरनुमय्योमानमय हूँ को मुनू के सो रा को  
 न कहि तो सउर आनो है ॥ ११ ॥ **अथ वीर सल छेने ॥**  
 होइ वीर उत्साह में गोर तर नडुति अंग ॥ अ  
 तिउर गंभीर कहि के सवण प्रसंग ॥ १३ ॥ **आरा**  
**धिका को वीर स कै विनु ॥** गति गज गज सा जि रेह  
 की ही पति वा जि ह वर ध भा व पति ग जे चल चल सौ ॥  
 के सो रा स में रा हा स अ सि कु च भर भि रे भे र भे प्र ति भ र  
 भाने नाष जाल सौ ॥ ला ज सा ज कु ल का नि सो च पो व  
 भय भानि भो है धनु वा नु तानि लो च न वि सा भे ल सौ  
 प्रेम को कच लु क सि सा ह सु स हा र कु ले जा ति र ति र  
 नु या नु म र में न यु पा ल सौ ॥ १४ ॥ **आ क ल को वीर**  
**सक विनु ॥** अथ जे उरारि हो कि व क जे वि रा रि है  
 मूक स के सी के सो रा के सी जे प छारि हो ॥ हरि हो  
 कि प्रान ना थ पूत ना के प्रान नि जे व न ते कि व न मा  
 ला का ली जे नि कारि हो ॥ करि हो वि म दु घ न वा ह न  
 जे प न सा म का ह सौ न हो रे हरि या ही सौ जे हा रि हो  
 वे ही का स का म व र व ज की कु मा रि का नि मा र ते न  
 र के कु मा र क व मा रि हो ॥ १५ ॥ **अथ भयान कर सक**  
**छेना ॥** होइ ॥ होइ भयान कर स सरा के सव साम स  
 रा ॥ जा को रे व त स न त ही उ प जि पे रे भ य भा री ॥ १६ ॥  
**आ ग भा न को भयान कर सक विनु ॥** भुव मंड ल में  
 डि त के घ न पो रि उ ठे रि वि मंड ल में डि ग रा ॥ घ ह रा ॥  
 ति घ रा घ र का त के सं घ र घो ष घ रे न घ री हं घ री ॥ द  
 स हं रि सि के स व रा मि नि रे धि त गी यि य का मि नि के  
 ठ त री ॥ ज नु यं घ हि या इ पु रं द र के व न पा व क की ल प  
 टे अ य री ॥ १७ ॥ **आ क ल को भयान कर सक विनु ॥**  
 रो स में र स के व ल वि स ते सर स हो त जा ने सो प्र वा  
 व ल ह य त्रि रा धो जि नि वा षा है ॥ के सो रा दु घु री वे ला इ  
 क भ र व त म आ लु ल डु जी स जा की आ षे अ भि ला षी रा म  
 है ॥ स धे के स धा रि वे ले आ प सि व न मो हि स धे ह में ॥ १८ ॥



सखावातेमोसोउनिभाषाहै। ऐसेमेंहैंकैसेंजाउरु  
 दूधोंरेखोजाकामकीकमानसीचटाभोंहैराषीहै  
 ॥ १८ ॥ **अथवीभत्तरसलक्षण** ॥ दोहा ॥ निरोमेंवीभ  
 त्तरसनीलवरनवपुतास ॥ केसवदेवतसनतहीतच  
 मनुहोतउदास ॥ १९ ॥ **श्रीराधिकाकोवीभत्तरस** ॥ क  
 विनु ॥ माताहीकोमासतोहिलागतहैमीठोसुषयिय  
 तपिताकोलोहनेकुनअघातिहै ॥ भेयानिकेकंठनि  
 कोकारतिनकसकतिनेरोहियोकेसोहैजुकहतसि  
 हातिहै ॥ जबजवहोतिभेरतवतवमेरीभदरेसीसोंहै  
 दिनउठिषातिनअघातिहै ॥ घेतिनापिसोचिनीनिसा  
 चरीकीजारहैतुंकेसोराकीसोंकहितेरीकौनजाति  
 है ॥ ३० ॥ **श्रीकृष्णकोवीभत्तरसकविनु** ॥ दूदेराटघुन  
 घनेंधूमधरिसो नसनेंकागुरकंजीडीसांयवीछीननि  
 घातज ॥ कंटककसितविनवलितविगंधजलतिन  
 कीतलपताकोअतिललचातज ॥ कुलराकुचीलगा  
 तअधुतमअधातकहिनसकतवातअतिअकुला  
 तज ॥ छेडीमेंघुसेकिघरंधनकोघनस्यामयरघरती  
 नियहजातनलजातज ॥ ३१ ॥ **अथअदुतरसलक्षण**  
 ॥ दोहा ॥ होराअवभोरेशिसुनिसोअदुतरसजानि ॥ के  
 सवरासविलासनिधिपीतवरनवपुवानि ॥ ३२ ॥ **अभाष**  
 जकोअदुतरसकविनु ॥ केसोरासवालवैसरीपतिन  
 रुनितेरीवानीलघुवरननिबुधियरिमानकी ॥ कोमल  
 अमलउरउरजकठोरजातिअवलापेवलवीरबंधनवि  
 धानकी ॥ चंचलचितौनिचितअवलसभावसाधुसक  
 लअसाधभावकामकीकथानकी ॥ वेचतफिरतिरधि  
 लेतनतिहैहिलेमोलतीअदुतरसभरीवेदीछषभान  
 की ॥ ३३ ॥ **पुनः कविनु** ॥ वजैकीकुमारिकावेलीनेंस  
 कसारिकःपटावैकोककरिकानिकेसवसवौनिवा  
 हि ॥ गोरोगोरीभोरीभोरीघोरीघोरीवैसफिरैदेवतासीहो  
 रीदोरीआरौरीवोरौचाहि ॥ विनुगुनतेरीआनभृकुटीक



जानतानिकुटिलकराछवानयहअधिरजुआहि। सतसा  
 नईठठाठनेरेअडीठसतुपीठिरेदेमारतीवेचकुतीनके  
 उताहि॥३४॥ श्रीकृष्णकाअडुतास॥ कवि॥ वनमे  
 हिमिलेहुतेकेसवराइकहावरनौगुनगरउघारे। जस  
 रापेंगईतौवेगोंहिनिपेवुरिपाहिगुहावतजाइनिहारे  
 घरजाउतौसौवतहोंकेरिजाउतौनेरेपेपातवराहधिधा  
 रे। सपनोयहसत्यकिधोंसजनीहरिवाहिरहोतवडेघर  
 वारे॥३५॥ पुनः॥ माषनकेचोरमधुचोरदधिहधचोरदे  
 धोनहीदेवतहीचित्तचोरलेतेहे। पुरुषपुरानअरुमान  
 पुरानरहेपुरुषपुरातनकहतकिहिहेतेहे। केसोदास  
 देविदेविसुरनकीसंदरीचेकरतिविचारुसवसमतिस  
 मेंतहे। देवेंगतिगोपिकाकीभूलिजातनिजगतिअग  
 तिनिकेसंधोपरमगतिदेतेहे॥३६॥ अथसमरसक  
 ने॥ दोहा॥ सवतेहोइउदासमनवसेसकहीठोर। नाही  
 सोंसमरसकहेकेसवकविसिरमोर॥ श्रीगधाउ  
 कोसमरसकवि॥ देवेंनहीअरविंदनितोचितचंद  
 कीआनदकंदनिकाश। काननिकामुकथाकरेकामि  
 नितानेविधामकीसंदरताई। देविगईजवतेंतुमको  
 तेवतेंकछुवाहिनदेयोसहाई। छोडेगीदेहुजुदेवेवि  
 नाअहोरेहुनकान्हकहूँहैंदिवाई॥३७॥ श्रीकृष्णको  
 समरसकवि॥ पारिकषातनराखोछंदाषनमाष  
 नहंसहंसमेटीइठाई। केसवअुषमयूषहूँहूँषतिआई  
 होतोपहिछाडिजिठाई। तोरनछंदकोरसरंचकवा  
 षिगसकरिबोहैंठिवाई। तारिनतेउनिराषीउठासम  
 तिसधावसधाकामिठाई॥३८॥ पुनः॥ देनुजमनुजजी  
 वजलजयलजनिबोपरोईरहतजहांकालसोंसम  
 रहे। अनंतअजरअजअमरोमरतपरिकेसवनिकसि  
 जानैसोईतोअमरहे। वजतअवनसुनिससुनिसवर  
 करिवेदभागोभैयाभागनिज्योभागापरेभवकेभवन राम  
 मागभयकोभवहूँ॥३९॥ दोहा॥ इहिविधिवरनूँ ३५



वरनवदुनवरसरसिकविचारिवांधडुहन्निकवित्रकी  
कहिकेसबविधिचारि॥४१॥**इतिश्रीमन्नारायणकुमार**  
**रईदजातविरचितायोरसिकपियायोरसगुनसर्व**  
**नंनामचतुर्दशप्रभावः॥४२॥अथवृत्तिवर्ननं॥दोहा**  
**॥प्रथमकोसिकोभारतीभनिआरभदाभांति॥** कहिके  
सबसुभसंतिकीचतरचतुरविधिजाति॥१॥**अथको**  
**सिकीसकुनं॥दोहा॥** कहियेकेसवरसजहंकननाहा  
ससिंगार सरलवरनसुभभावजहकोसिकीविचा  
र॥२॥**कविशु॥** मिलिवेकोएकफिरेमिलिमिलिहति  
कानिमिलिमनमनहाविलासविलसातिहे॥बोलिवे  
कोएकवालबोलसुनिवेकोओरबोलिवोलितोरथ  
तिवतनिवसतिहे॥देखिवेकोएकफिरेदेवतासीदोरी  
दोरीदेवतामनारिनरानमनसनिहे॥कीजैकहाक  
रमकोएहीरुपमेरीमारितोमेरेकान्हजकैनावहीह  
सतिहे॥३॥**अथभारतीलछनं॥दोहा॥** वरनियेजाम  
हिवीरसरसमयुअरभुतहास॥कहिकेसबपुभअ  
थुजहसोभारतीप्रकास॥४॥**कवित्र॥** काननिकन  
कपवचकचमकतिगरुधुजगुलसुलीरुलकतिअति  
सुषराश॥केसबकुवीलौछुसीसफूलसारथीसौके  
सरिकीआउअधराधिकारचीवना॥नीकेहानकीर  
समनीकोमोतीतीकीनाकएकहीविलोकनिगुण  
चतोगसंविकार॥लोचनविसालभालजरिउजराइल  
लुमानोवद्योमीननिकेरथमनमघराश॥५॥**अथ**  
**आरभयलछनं॥दोहा॥** केसवजामेरुदुरसभया  
भसकुजानि॥आरभदाआरंभयहपयपयजमक  
ववानि॥६॥**कवित्र॥** घोरघनेघनघोरतसज्जलउ  
जलकजलकीरुचिरावे॥फूलेफिरेइभसेनभया  
इकसावनकीपहिलीतिथिपंचो॥बोहंकुदातडि  
तउयेउयेवनिताकहिकेसबसोवे॥जानिमनोउ  
राजविनाजजउपरकालबुरिनिनीनावे॥७॥  
**सानिनी॥दोहा॥** छुदुतअसिगारासारा



३६

समानसनतहिसमुक्तभावभतिसोसांतिकीसजान  
॥८॥**कवित्रु॥** केसोदासलाषलाषभातिनिकेअभिला  
षकारिदेरावावरीनवाहहियेहोरीसी॥राधिकाहरिकी  
शीतिसवतेअधिकजानिरतिरतिनाथहंकेदेवोरति  
थोरीसी॥तिनमहिभेदुनभवानिदुपैपाथोजाभार  
थमेभारथीकीभारथीहेभोरीसी॥सकैगतिरकेमति  
रकेपानुसकेमनुदेविदेकैदेहेहेनैनिकीजोरीसी  
॥९॥**दोहा॥** राहिविधिकेसवदासकविनवरसवरनि  
कवित्र॥पांचभोतिअनरससुनोताहिनहीजेचित्र॥  
॥१०॥**रतिप्रोमन्नाहारजकुमारंइजीतचिरचिता**  
**यांसिकप्रियायांचतुर्विधकवित्रप्रतिवर्नननामयं**  
**चरसःप्रभावः॥१५॥ अथअनरसलछन॥दोहा॥**  
प्रत्यनीकुनारसविस्ससुनोकेसवदुःसंधान॥पात्रदुष्ट  
कवित्रकहकोरसकुसकतिनवधान॥**अथप्रत्य**  
**नीकरसलछन॥दोहा॥** जहांसिंगारविभक्तभयवी  
रहिवरनेकोर॥रुइहिकरुनामिततहाप्रत्यनीक  
रसहोस॥**कवित्र॥** हसिबोलतहीसहंसैसवकेस  
वलाजभगावतलोकभंगे॥कछुवातवलावतघेरु  
वलेमनआनतहीमनमसुजेगे॥सविबूजुकहेसडु  
तीमनमेहीजानियहेनहिपोउमगे॥हरिकोनेक  
डोविषसारतहीअंगुरीनियसारनलोगुलगे॥३॥  
**अथनीरसलछन॥दोहा॥** जहोदेयतिसहहीमिलै  
सराहेयहरीति॥कपदुरेहेलपिटाइमननीरसरस  
कीपीति॥४॥**कवित्रु॥** गाहेतसिंधुसयोननकेजिनकी  
मतिकीअविदेहदेहली॥मोहिहसीडुषुदोउरईतिह  
हंसोजनावतियेमयहेली॥जानीहोजातिमिलीस  
हंजियनाहीसतीसतेरेधिवलीहमसोतिसहेली  
॥५॥**अथविरसलछन॥दोहा॥** जहांसोगमेभोगको  
रनिकहेकविकोर॥केसवदासडुलाससोतहीवी  
दोहा॥**कवित्रु॥** केसोदासलाषलाषभातिनिकेअभिला  
षकारिदेरावावरीनवाहहियेहोरीसी॥राधिकाहरिकी  
शीतिसवतेअधिकजानिरतिरतिनाथहंकेदेवोरति  
थोरीसी॥तिनमहिभेदुनभवानिदुपैपाथोजाभार  
थमेभारथीकीभारथीहेभोरीसी॥सकैगतिरकेमति  
रकेपानुसकेमनुदेविदेकैदेहेहेनैनिकीजोरीसी